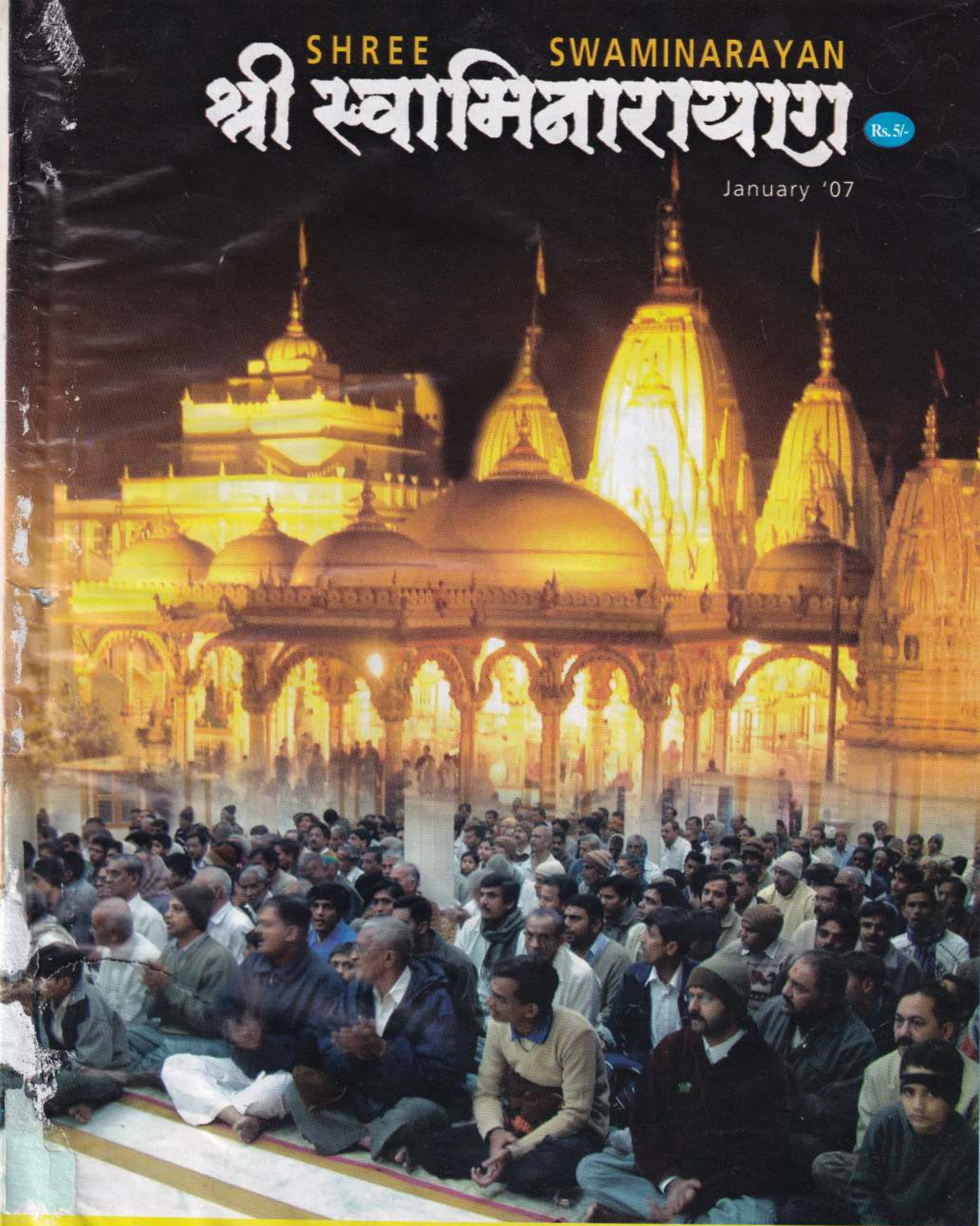
SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

Rs. 5/-

January '07



પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૯ Publisher: Shree Swaminarayan



विरमगाँव में श्री बाबुभाई ठक्कर के यहाँ तुलसी विवाह प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री एवं पू. लालजी महाराजश्री ।



चलोडा (जोतुबा) के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री



कोलोनियाँ (अमेरिका) मंदिर में अन्नकूट दर्शन ।



पुंधरा (ता. वीजापुर) गाँव की सत्संग सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



जेतलपुर श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय में सरस्वती पूजन प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री एवं विद्यार्थी संतो द्वारा आयोजित संस्कृत नाटक का दृश्य



विरमगाँव में श्री बाबुभाई ठक्कर के पौत्रों को यज्ञोपवीत धारण कराकर आशीर्वाद देते हुए पू.पा. लालजी महाराजश्री ।



अंजि में पूजन प्रसंग पर आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।

શ્રી નરનારાયણદેવ પીઠસ્થાન મુખપત્ર

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ६ दिसम्बर -२००६



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५१७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के आंगन में धनुर्मास में धुनि का धन्य आवाज एवं धर्मवंशी धर्माचार्य का धन्यवाद	४
४.	मकर संक्रान्ति	६
५.	भगवान की कृपा से राग-रागिनियों को मूर्ति मंत करने वाले देवानंद स्वामी	७
६.	अब तो कुछ विचारो !!!	८
७.	"प्रतिष्ठापित मूर्ति में भगवान" आचार्यश्री में भगवान	९
८.	मूर्ति पूजा की महिमा	१०
९.	श्रीजी महाराज की व्यूह रचना	११
१०.	दयालु देव श्री नरनारायणदेव	१२
११.	सत्संग सुरभि : मुक्त तो आज हुआ हूँ !	१३
१२.	सत्संग बालवाटिका (१) सुख का मूल (२) ऐसा अपराध नहीं करना	१६
१३.	भक्तिसुधा (१) सुख कहाँ है ? (२) सच्चा संग संत का (३) समदर्शी सहजानंद (४) उँझा गाँव में श्रीहरि का आगमन	१७
१४.	समाचार वृत्तांत	२०

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

पवित्र दिन में अपने इष्टदेव का भजन स्मरण करने से जीव के हृदय में जगत की आसक्ति दूर होती है तथा ईश्वर में प्रीति होती है । जबतक जगत के नाशवंत पदार्थो से आसक्ति नहीं जाती तब तक भगवान के स्वस्म में चित नही लगता । इसी कारण जीव को बारम्बार जन्म मृत्यु के महादु:ख में भटकना पडता है । जन्म एवं मृत्यु के महाकष्ट में से छूटने के लिए केवल "एकमेवम्" भगवान की शरण के सिवाय दूसरी कोई उपाय सम्पूर्ण ब्रह्मांड में नहीं है । इसीलिये अपने विशिष्टाद्वैत सिद्धांत में शरणागति भक्ति (प्रपन्न भक्ति) को ही साध्य भक्ति के स्म में बताया गया है, जिसे प्राप्त करने के लिये प्रयत्न करना चाहिए । अन्य सभी भक्ति साधनभक्ति है । जप, तप, व्रत, उपवास, दान, धर्मकार्य आदि साध्य भक्ति है । साधन जितना श्रेष्ठ उतनी साध्य की प्राप्ति भी श्रेष्ठ होती है । जिस प्रकार अपने पास किसी स्थल पर पहुंचने के लिये वाहन सरल साधन है, स्थान प्राप्ति साध्य है । वाहन जितना उत्तम होगा मुसाफिरी भी उतनी उत्तम होगी ! जैसे कार, रेलवे, बस या विमान इसमें से जिस वाहन का उपयोग करें वैसी सरलता से एवं थोडे समय में गन्तव्य स्थान पर पहुंचा जा सकता है । इसी प्रकार जितनी साधन भक्ति अपनी दृढ होगी उतनी जल्दी साध्य भक्ति को सिद्ध करके आत्यंतिक मोक्ष तक यह जीव पहुँच सकता है । इसलिये परमेश्वर की भक्ति में किसी प्रकार कोई कमी नहीं रखना चाहिये ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

दिसम्बर - २००६

१. संत दीक्षाविधि अपने वरद हाथों से किये ।

३. श्री अम्बालाल सांकडचंद पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण, गांधीनगर ।
श्री जयेसभाई विठ्ठलभाई पटेल (वुडवाला) तथा वहाँ के अन्य भक्तों के घर पदार्पण, राणीप ।
श्री नटवरभाई जादवभाई पटेल,
श्री अरविंदभाई पटेल (विमलपावडर) के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण ।

५. श्री चिमनभाई नारायणदास पटेल के यहाँ होमात्मक महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, सोला ।
श्री श्रीकांतभाई कांतीलाल शाह के नये मकान में पदार्पण, बोपल ।

६. वडताल मंदिर श्री लक्ष्मीनारायणदेव के दर्शनार्थ पदार्पण ।
श्री महेन्द्रभाई कस्तूरचंद झिन्झुवाडीया के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण, सेटेलाइट ।

७. शियाणी (ता. लींमडी-मूलीदेश) बहनों के श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

८. मानपुर (ता. ध्रांगध्रा-मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर में धून की पूरणाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

९. श्री जयंतीभाई शिवाभाई पटेल (कौशलेन्द्र ईन्जीनीयरवाला) के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, हांसोल (मुंधरा गाँव-जि. गांधीनगर) ।
श्री विनोदकुमार गिरधरलाल पटेल के यहाँ सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण ।

१०. श्री अमृतभाई हरगोविंदभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, सोला भागवत विद्यापीठ ।
श्री दीलीपभाई कानजीभाई सुहागिया के यहाँ पदार्पण, नवा नरोडा ।
श्री बलदेवभाई परसोत्तमभाई सुहागिया के यहाँ पदार्पण, नवा नरोडा ।

११. श्री अमीतकुमार प्रागजीभाई तडावीया के यहाँ पदार्पण, (विवाह प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण-मेघाणीनगर) ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा-पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री नटवरलाल बेचरदास पटेल के यहाँ सत्संग सभा में पदार्पण - शाहीबाग ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीयाणा (ता. विरमगाँव) प्रसादी की छत्री - एवं चरणारविंद की पूजा विधि प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. श्री स्वामिनारायण मंदिर अखियाणा (ता. पटणी-मूलीदेश) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री गोकुलभाई पटेल के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण, राजपथ क्लब, एस.जी. हाईवे ।

१४ डिसम्बर २००६ से ३ जनवरी २००७ तक केनिया (इष्ट आफ्रिका एवं लंदन-हेरो, यू.के. सत्संग प्रचारार्थ पदार्पण ।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के आंगन में धनुर्मास में धुनि का धन्य आवाज एवं धर्मवंशी धर्माचार्य का धन्यवाद

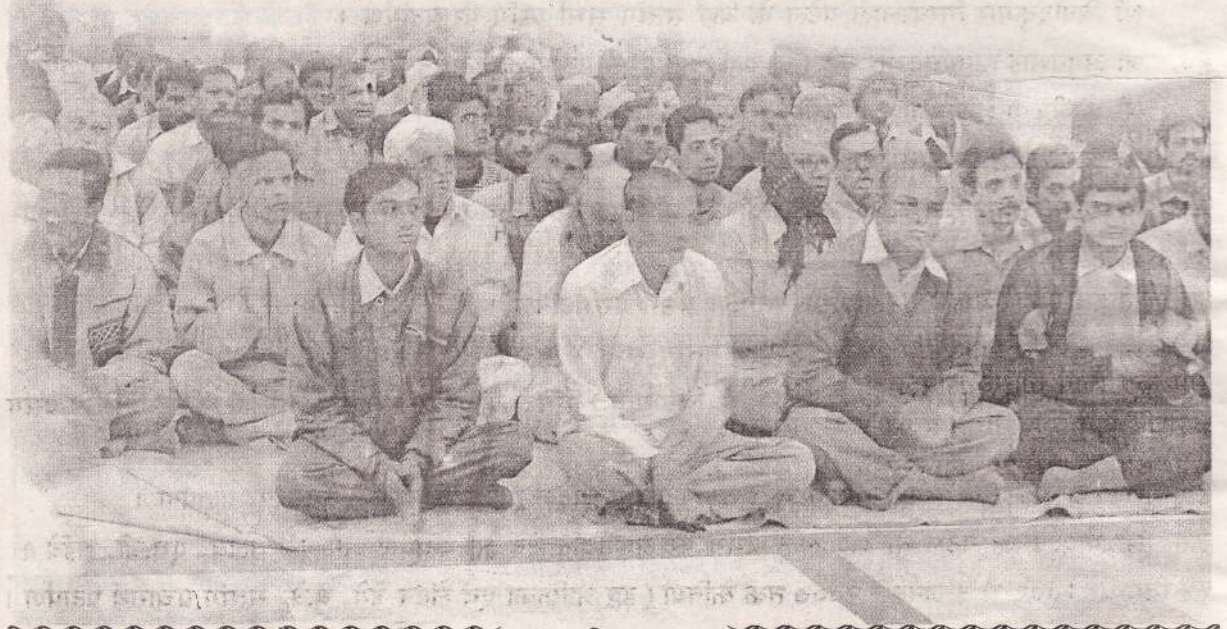
- शास्त्री नारायणवल्लभदासजी (श्री सहजानंद गुरुकुल वडनगर)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनरायणने विश्व में सर्वप्रथम भरतखंड की धरती पर अहमदाबाद के बीच में श्री नरनारायणदेव का मंदिर स.गु. आनन्दानंद स्वामी के मार्गदर्शन में निर्माण कराकर श्रीहरिने स्वयं श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को अपनी बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया, जिससे आश्रितों का मोक्षमार्ग खुल गया।

जब से भगवान श्री स्वामिनारायण ने महाप्रभु श्री नरनारायणदेव की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया, उसी समय से श्री नरनारायणदेव की छत्रछाया में अनेक उत्सव, कथा-पारायण जप, यज्ञ, महापूजा तथा अन्यान्य जीव कल्याण कार्य होते रहे। इन्ही सब के बीच में प्रति वर्ष आने वाला धनुर्मास जिसमें "स्वामिनारयण" महामंत्र की निरंतर ध्वनि गुंजित होती रहती है। ठन्ढी के कडकडती मौसम में भक्तजन प्रातः स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर ५ बजे तक मंदिर में आकर मंगला आरती का दर्शन करके मंदिर के विशाल सभा मंडप में बैठ जाते है और स्वामिनारायण महामंत्र की धूनि में निमग्न हो जाते है। उन्हें ऐसा होने लगता है जैसे अक्षरधाम में बैठे हों ऐसा वे दिव्यानन्द का अनुभव करने लगते हैं।

अहमदाबाद मंदिर के विशाल सभा मंडप में भक्तों को एक तरफ श्री नरनारायणदेव का सांनिध्य मिलता है तो दूसरी तरफ श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री इसके साथ ही पूज्य लालजी महाराजश्री का सांनिध्य मिलता है। संतो के समागम के साथ श्रीहरि के पवित्र प्रसाद का स्वाद लेकर धन्यता का अनुभव होता है।

- धनुर्मास अर्थात् सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की प्रसन्नतां प्राप्त करने के लिए "स्वामिनारायण महामंत्र" की धूनि करने का सर्वश्रेष्ठ महीना।
- धनुर्मास में अर्थात् सर्वावतारी श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित धर्मवंशी धर्मगुरुके प्रति धर्म के साथ भक्ति एवं श्रद्धा व्यक्त करके शुभाशीर्वाद प्राप्त करने का अनमोल अवसर।
- धनुर्मास अर्थात् नित्य एक मास संयम से धुनि में धर्मपुत्र श्रीहरि के प्रति तन, मन, धन के साथ भक्ति भाव को समर्पित करके श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त करना, इसके साथ



धर्मवंशी धर्मधुरंधर प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करनेका सुनहरा समय ।

उपरोक्त धुनि करने से श्रीहरि की प्रसन्नता, धर्म गुरुका शुभाशीर्वाद तथा संत-भक्तों का धन्यवाद प्राप्त करने का अवसर कहाँ मिल सकता है ? जहाँ पर भगवान स्वामिनारायण ने स्वयं मूर्ति प्रतिष्ठित किया हो, जहाँ पर धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री द्वारा मंदिरो में मूर्ति प्रतिष्ठा की गयी हो, चाहे वह स्वदेश में हो या परदेश हो, श्रीहरि के सांनिध्य में बैठकर धनुर्मास पर्यन्त आनन्द की अनुभूति करने का मास धनुर्मास है ।

भक्त नरसिंह एवं मीराबाई की तरह जो भजन करते हैं उनका भगवान सर्वप्रकार से रक्षण करते हैं । भगवान से कोई बडा नहीं है । जिस प्रकार मीरा के जहर को प्रभुने अमृत बना दिया । वह केवल ऐतिहासिक घटना नहीं है । बल्कि यह विश्व एवं विश्वम्भर के स्वभाव का शास्वत परिचय है । जहर देना या उगलना जगत का धर्म है, जब कि अमृतवर्षा करना ही श्रीहरि की चिरंतन प्रतिज्ञा है । लोक निंदा विष है लेकिन इसका पालन करना सन्मार्ग पर चलने वाले का धर्म है । श्रीहरि का अखंड स्मरण हृदय से करना ही आश्वासन है ।

जिस प्रकार श्रीकृष्ण तथा सुदामा की मित्रता गुरुसांदीपनि ऋषि के आश्रम में हुई थी, परिणाम स्वस्म श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए गुरु सेवा में से प्रगट हुई वह मैत्री अखंड एवं चिरंतन थी । उसी मित्रता के रहस्य में सुदामा सतत नारायण के स्मरण में मग्न रहते थे । फिर भी हम जानते है कि सुदामा का चित्र बड़ा दयनीय, करुण प्रस्तुत किया जाता है । सुदामा का चरित्र इतना कमजोर है ऐसा लगता नहीं है ।

श्रीकृष्ण के पास जाने पर भी जो मांगता नहीं है ऐसा उन्नत चरित्र सुदामा का है । कितनी निष्काम भक्ति ? अयाचक व्रत का पालन करने वाले एक महान विप्र अर्थात् सुदामा । सुदामा का संसार बहुत बडा होना चाहिए । विद्वान कभी संकुचित वृत्ति के नहीं होते । जो अपने घर में सैंकडो विद्यार्थियों को रखकर खिलाने के साथ विद्यादान देता हो, उसके लिये बहुत कठिन काम है ।

यह विद्यादान किस प्रकार सतत चलता रहे, इसकी उपाय के लिये सुदामा मित्र कृष्ण के घर गये थे । भगवान कृष्ण उनका स्वागत बडे प्रेम एवं श्रद्धा से किये । भूतकाल की याद करके दोनो भाव विभोर हो गये और पूछने लगे । पछी शामलियाजी बोलिया तने सांभरे रे, हानी बालपणानी प्रीति मने केम विसरे रे ॥ श्रीकृष्ण सुदामा को मार्ग दर्शन देते हुए कहे कि "समाज कभी खराब नहीं होता यथार्थ को समझने वाले हरकाल में होते हैं । मात्र आप को यथार्थ का ज्ञान होना चाहिए । आपके शैक्षणिक प्रयोग से समाज अनभिज्ञ है । जिस प्रकार अपने आश्रम में रहकर ज्ञानदान करते हो, उसी प्रकार सद्विचार तथा सत्संग का प्रचार समाज में भी करो, जिससे समाज को समझ मेंआयेगा और समाज हर पक्ष में आपके साथ रहेगा ।

सुदामा वैसा ही किये । सुदामा का दैवी विचार तथा श्रीकृष्ण के प्रति अखंड स्मरण देखकर लोग खूब प्रभावित हुए । परिणाम स्वस्म दान की अविरत गंगा सुदामा के आश्रम में बहने लगी । सुदामा की झोपडी सोने की पुरी हो गयी । सज्जनो ! यही निरन्तर श्रीहरि स्मरण का फल है ।

पवित्र धनुर्मास के दिन में अखंड धुनि, कथा-कीर्तन द्वारा इष्टदेव सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण की प्रसन्नता प्राप्त करके, अपने धर्मगुरु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करने का अवसर है । इसके साथ श्री नरनारायणदेव के चरण कमल का नित्य दर्शन करके धन्यता का अनुभव करें यही धनुर्मास के धुनि का रहस्य है ।

समैया है समैया
(उत्सव है उत्सव)

प्रगटावो ज्ञाननो दीपक,
समैयो छे समैयो ।
शोधी लो मुक्तिनुं द्वार,
समैयो छे समैयो ।
अंधारामां भटकता रहीने,
ठोकरो खूब खाधी ।
कंई सूझ पडती न होती,
जगत हतुं दुःखदायी ।
मस्त स्यो हवे समैयामां,
समैयो छे समैयो ।
सौ सत्संगियो उपस्थित छे,
समैयो छे समैयो ।
नथी रह्यो भ्रम हवे,
अक्षरधाममां ज जईशुं ।
सोहं ने प्रकाश पामी,
स्वयं मां ज समाईशुं ।
आ समैयो गुरुवर्यनो छे,
आचार्यश्रीने केम भुलाय ।
मलशे आचार्यश्री अंतरघटमां
समैयो छे समैयो ।

- प्रो. महादेव धोरियाणी

मकर संक्रान्ति

- साधु जयेन्द्रप्रसाददास गुरु गोविन्दप्रसाददासजी (श्री स्वा.ना. स.वि. जेतलपुर)

भारतीय समाज "उत्सव प्रियाः लोकाः" उत्सव प्रिय है । इस में कारण यह है कि प्रतिदिन कार्यभार होने से तथा समय का अभाव होने से जब कोई उत्सव आता है तो उसे बडे हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं । जिससे उन्हें मानसिक शांति मिलती है । जिस प्रकार अपने घर आने वाला व्यक्ति आनन्द दायक होता है, ठीक यही स्थिति उत्सव के लिए है । उत्सव के पीछे एक रहस्य छिपा रहता है । उत्सव किसे कहा जाय ? उत्सव शब्द उद् + सु धातु से बना है ।

"जन्मना जापते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चते ।"

सांस्कृतिक उत्सवो द्वारा द्विजत्व प्राप्त होता है । १४ जनवरी को जब सूर्य मकर राशि पर आता है तो उत्तरायण होजाता है । सूर्य एवं पृथ्वी के आसपास के भ्रमण की दिशा बदलने से उत्तरायण होता है । सूर्य के संक्रमण के साथ साथ अपने जीवन का संक्रमण बदल जाता है । अपने उपनिषदों में कहा गया है - "तमसो माज्योतिर्गमय" अर्थात् अंधकार में से प्रकाश की तरफ प्रयाण करने की वैदिक प्रार्थना । मकर संक्रांति अर्थात् अंधकार के ऊपर प्रकाश की विजय । मानव जीवन में जो अज्ञान, अंधश्रद्धा, जडता, कुसंस्कार, इत्यादि अवगुणों को जीवन में से हटाने को ही संक्रांति कही जाती है । संक्रांति अर्थात् "सम्यक्क्रांति संगक्रांति, संघक्रांति - सम्यक्क्रांति - मनुष्य के मन में खराब संकल्प को दूर करके उत्तम संकल्प करना चाहिए ।

संगक्रांति - मनुष्य इस समय काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद इत्यादि विकारो के संग का परित्याग करना चाहिए -

संगः सर्वात्मना हेयः स चेत् त्यक्तुं न शक्यते ।
स सद्भिः सहकर्तव्यो साधु संगो हि भेषजम् ॥

सज्जन पुरुष का संग करना ही अपने जीवन की औषधि है । कुसंग से मनुष्य का पतन होता है । अनंत गुणों से युक्त कर्णक्रा धृतराष्ट्र शकुनि, दुर्योधन, दुःशासन इन चार चण्डाल चौकड़ी का संग होने से पतन हुआ । इसलिये उत्तरोत्तर महान पुरुषों का संग करना चाहिए । यही सच्ची संग क्रांति है ।

संघक्रांति - कोईभी कार्य करना हो तो संगठन की जरूरत होती है । "संघे शक्तिः कलौयुगे" संघ में विशिष्ट शक्ति का निर्माण होता है । इस विशाल विश्व के अन्दर अकेले कार्य करना बडा कठिन है । इसलिये उसे संघ की जरूरत होती है । किसी कविने सत्य कहा है ।

बहुजन मणी जे करे ते एके नव थाय ।
सावरणी घर सज्ज करे, सणी एके शुं थाय ॥

संघ में विशिष्ट शक्ति होती है । संघ मैं एक साथ रहने वालों का संबन्ध स्नेह पूर्ण एवं मधुर होता है । इस बात की स्मृति दिलाने के लिए लोगों को तिल एवं लड्डूदिया जाता है । तिल में स्निग्धता है । स्नेह सम्बन्धों में तिल स्निग्धता लाता है । गुण कडवेपन को दूर करके मीठा पन लाता है । सगे सम्बन्धियों में किसी कारणमतभेद हो गया हो तो एकाकी पन लगने लगता है ।

"मने दूर पणु चाले निकटतानु ।
भरी भीड मही लागे एकलवायु ॥

इस उत्सव के निमित्त स्नेहियों के यहाँ तिल का लड्डू दिया जाता है, जिसके खाने से आत्मीय प्रेम बढने लगता है । अन्तर को कलहदूर हो जाता है । तिल के लड्डू में पैसा रखकर गुप्तदान देने की महिमा है ।

इन दिनों धनपती लोग, सामान्य लोग सभी पतंग उडाते हैं । लेकिन पतंग की मस्ती एवं अपने जीवन की मस्ति दोने समान है जब पतंग अपनी मस्ती में उडता है । त तक ठीक, कहीं वह जाकर किसी तार में या किसी वृक्ष की टहनी में फंसता है तो डोरी से अलग होकर पतंग अलग हो जाता है । ठीक यही स्थिति जीवन के डोरी की है, जब जीवन की डोरी कट गई तो शरीर की स्थिति ऐसी ही होती है । अपने जीवन की डोरी भगवान के हाथ में है । इसलिये भगवान की प्रार्थना करनी चाहिए कि हे भगवान अब हमारी जीवन की डोरी आपके हाथ में है ।

भगवान की कृपा से राग-रागिनियों को मूर्ति मंत करने वाले

देवानंद स्वामी

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

श्रीहरि के समकालीन आठ महाकवियों में देवानंद स्वामी का भी नाम समाविष्ट है । वि.स. १८५९ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन भाल देश के बडोल गाँव में जन्म हुआ था । माता का नाम बेनजी बा तथा पिता का नाम जीजीभाई था । वे रत्नु शाखा के मास्त गढवी थे । इनका घर का नाम देवीदान गढवी था। बाल्यावस्था से इनके हृदय में भगवान के प्रति भाव था। इनके पिता भगवान शिव के उपासक थे । पिता के संस्कार से वे भी शिव के उपासक हुए । बडोल गाँव से दश किलोमीटर दूर सांकलेश्वर महादेव के मंदिर में जीजीभाई पूजन अर्चन करने जाते थे । पिता के साथ देवीदान भी प्रतिदिन पूजा करने जाते थे ।

एक समय पिताजी बाहर गये हुए थे, उस समय देवीदान शिवालय में पूजन करने आये । उस समय देवीदान को मन में हुआ कि भोलानाथ मेरी पूजा प्रत्यक्ष स्वीकारेंगे या नही ? अत्यन्त प्रेम से भोलानाथ की पूजा किये, वही पर शिवजी प्रगट हो गये। भोलानाथ का प्रत्यक्ष दर्शन करके कृतकृत्य हो गये । अपने आत्यंतिक कल्याण के लिए प्रार्थना किये । महादेव प्रसन्न होकर कहे कि "परब्रह्म परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान इस समय इस धरती पर विचर रहे है, एक समय वे आप के गाँव में भी आयेंगे, उनकी शरणागति स्वीकार



कर लीजियेगा । आप महान कवि के रूप में प्रतिष्ठित होंगे । आपके ऊपर स्वामिनारायण भगवानकी अत्यन्त कृपा होगी ।

जेतलपुर में यज्ञ करने के बाद श्री स्वामिनारायण भगवान गाँव-गाँव विचरण करते हुए बडोल आये सम्पूर्ण गाँव उनके दर्शन के लिए उमड पडा । प्रभु आज इसी गाँव में रुके, ऐसा सभी का आग्रह था। इशी समय देवीदान भी आ गये । देवीदान भगवान शिवने जैसा बताया था वैसा सभी लक्षण देख कर कहे कि हे प्रभु हम आपकी शरण में आये हैं, आप मुझ शरणागत को स्वीकार करें । तब भगवान ने कहा हे देवीदान ! मैं आपको लेने ही आया हूँ । भगवान उन्हे अपने साथ लेगये और साधु की दीक्षा देकर उनका नाम देवानंद रखकर ब्रह्मानंद स्वामी को सौंप दिये । ब्रह्मानंद स्वामी ने उन्हे काव्य निर्माण में निपुण बनाया । गुरु कृपा तथा हरिकृपा से महान कवि बन गये । जब-जब देवानंद स्वामी राग रागिनियों का आलाप करते तब श्रोता स्तब्ध हो जाते थे ।

श्री नरनारायणदेव की जब प्राण प्रतिष्ठा अहमदाबाद के कालुपुर मंदिर में श्रीहरिने किया, उस समय देवानंद स्वामी ने सभा मंडप में अपने वाद्य यंत्र से सारे श्रोताओं को मुग्ध कर दिया था । गायकवाड सरकार के गायकों को भी अपने गायन से वडोदरा में मंत्र मुग्ध कर दियाथा । सूरत के अरदेशरजी कोतवाल को भी संगीत बहुत प्रिय था, देवानन्द स्वामी का कीर्तन सुनकर बहुत प्रभावित हुए थे । ऐसा ही धर्मपुर के राजदरबार में श्रीहरि की आज्ञा से गायन करके वहाँ के गायकों को अपने बस में कर लिया था। ब्रह्मानंद स्वामी के स्वधाम जाने के बाद मूली मंदिर के महंत बने । आजीवन राधाकृष्ण देव की यावत् जीवन सेवा किये । देवानन्द स्वामी तो दलपतराम कवि के काव्य गुरु थे । स्वामी के काव्य इतने भाववाही सरल शैली में है कि सुनने वाले का हृदय प्रभावित हुए विना रह नही सकता । (जिन कीर्तनो को ओडियो सीडी कैसेट प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने स्वयं प्रकाशित करवाया है जो अहमदाबाद मंदिर साहित्य केन्द्र में उपलब्ध है) । दादा खाचर एक समय जीवुबा लाडुबा के साथ मूली दर्शन

अनुसंधान पृष्ठ नंबर ११

अब तो कुछ विचारो !!!

- शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के वचन है कि हमारे द्वारा प्रतिष्ठित नरनारायण आदिक देवों में सदा प्रत्यक्ष रूप से विराजमान रहता हूँ। जो भक्त भाव से श्रद्धा से भगवान का दर्शन करता है, सेवा करता है, भोगलगाता है, जो भी कुछ अर्पण करता है हम उसे प्रत्यक्ष रूप से स्वीकार करते हैं। जो भक्त श्रद्धा से प्रार्थना करता है, उसे महाप्रभु सुनते हैं, उस के दुःख को दूर करते हैं।

इसलिये प्रिय भक्तजन ! आप लोग भगवान स्वामिनारायण को प्रत्यक्ष प्रगट मानते हैं ? या शरीर छोडकर चले गये है ऐसा मानते हैं ? इन दोनो में से आप क्या स्वीकार करेंगे ? हमें विश्वास है कि आप प्रथम को स्वीकार करेंगे। भगवान प्रत्यक्ष सर्वत्र विद्यमान है। जब ऐसा मानते हों तो भगवान का श्राद्ध क्या आप सभी को योग्य लगता है ?

यदि भगवान स्वामिनारायण का श्राद्ध करते हों तो भगवान की मृत्यु हुई है ऐसा मानना पडेगा। तब इस से बडा कोई द्रोह हो ही नहीं सकता। भगवान का श्राद्ध सामान्य व्यक्ति की तरह करने से भगवान की प्रसन्नता तो मिलेगी ही नहीं, बल्कि अप्रसन्नता ही मिलेगी।

एक तरफ अपने इष्टदेव को सर्वावतारी, सर्वोपरि, साक्षात् सदाप्रगट, प्रत्यक्ष परमात्मा मानते है, दूसरी तरफ मृत्यु को प्राप्त पितरों की कोटि में रखकर श्राद्ध करते है, यह योग्य नहीं है। ऐसा किसी धार्मिक जगत में देखा नहीं जा सकता है इसे श्राद्ध कहा जाय, अथवा निम्न कक्षा की भूल कही जाय, या अपराध कहा जाय कुछ समझ में नही आता है।

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण अपने आश्रितों के लिये कोई कमी नहीं रखे हैं। युगों-युगों तक चलती रहे ऐसी नीति-नीयम-आज्ञा अपने साम्प्रदायिक धर्मग्रन्थों में सुस्पष्ट लिख दिये हैं, लेकिन अपने इष्टदेव के श्राद्ध का उल्लेख कहीं मिलता नहीं है। प्रभु के अन्तर्ध्यान के बाद भी इस संप्रदाय की परंपरा सुंदर रीति से चले भगवान इसकी स्वयं चिन्ता किये है। यदि भगवान को अपना श्राद्ध कराना होता तो अवश्य कहीं इसका उल्लेख मिलता। लेकिन अपनी श्रीमुखवाणी से कही इसकी चर्चा नहीं किये। तो अपने इष्टदेव का श्राद्ध किस आधार पर किया जाता है, कब से प्रारम्भ हुआ, यह सभी संशोधन का विषय है। इस अयोग्य कार्य के लिये यह विचार क्यों आया होगा ? यदि उत्सव मनाना ही है भगवान बहुत सारे उत्तम से उत्तम प्रसंग बताये हैं। लेकिन भगवान स्वामिनारायण के प्रत्यक्षत्व में श्राद्ध करना क्या योग्य है ? हिन्दु धर्म में अनेक संप्रदाय है, उनके आश्रित अपने इष्टदेव की पूजा-अर्चना करते है। उत्सव करते हैं। लेकिन ऐसा कभी सुना नही गया की भगवान श्रीरामजी का कोई श्राद्ध करता हो, या द्वारिकाधीश भगवान श्रीकृष्ण का कोई श्राद्ध विधि करता हो। स्वामिनारायण भगवान शिक्षापत्री के ८२ वें श्लोक में विठ्ठलनाथजी के द्वारा किया गया जो व्रत उत्सवका निर्णय एवं सेवारीति को ही मान्य रखा है। तो विठ्ठलनाथजी कहीं भगवान के श्राद्ध की बात नहीं की है। केवल अपने ही सम्प्रदाय में श्रद्धा की दृष्टि से अथवा बौद्धिक दृष्टि से भी शोभनीय नहीं है, वह भगवान का श्राद्ध कहाँ से उचित है। यह कब से प्रारम्भ हुआ, इसकी खबर नहीं पडती है।

श्रीहरि की इच्छा में अपना जीवन मानने वाले, उन्हीं के साथ रहनेवाले गोपालानंद स्वामी जैसे नंद संत श्रीहरि के अन्तर्ध्यान के पश्चात् भी बहुत वर्षो तक इस धरती पर रहे, उस समय भी बहुत सारे साहित्य लिखे गये, लेकिन उन्होंने प्रभु के श्राद्ध की कहीं चर्चा नहीं कही है। तो हम सभी भी उसी परम्परा के है, इसका गौरव समझकर खराब परम्परा को समझकर त्याग करेंगे तो अपनी सत्यनिष्ठा एवं दृढ निश्चय अधिक प्रकाशित होंगा।

इसके अलावां अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री के १३८ वें श्लोक में श्राद्ध कर्म को पितृकर्म में बताया है।

"श्राद्धादिक जो पितृकर्म अपनी शक्ति के अनुसार यथा सम्भव करना चाहिये।"

तो क्या भगवान स्वामिनारायणा को सामान्य पितृ जैसा मानकर श्राद्ध करते हैं ? ऐसी मान्यता परमात्मा के प्रति अपराध द्योतित करती है। इसे अतिशीघ्र बन्द करना चाहिए जिससे पुनः अपराध के भागी न वन सकें।

प्रिय भक्तजन ! आप लोग इस लेख को श्रद्धा से, प्रेम से ज्ञानपूर्वक चिन्तन करते हुए अवश्य वांचना, वांचकर इस लेख में सत्यता भासित हुई हो तो जहाँ भी श्राद्ध होता हो वहाँ विरोध करके सत्य वात का प्रचार करना। इससे भगवान स्वामिनारायण आपके ऊपर प्रसन्न होंगे।

"प्रतिष्ठापित मूर्ति में भगवान" आचार्यश्री में भगवान

- प्रहलादभाई वी. पटेल (न्युजर्सी)

धर्मवंशी आचार्य जमांय रे,
सदा रह्यो छुं मारी इच्छाये रे ।
अमे एमा ए छे अम मांई रे,
एम समझो सहु बाई भाई रे ॥
कृष्ण मूर्ति आचार्योंने आपी रे,
अथवा तेणे हस्ते करी स्थापी रे ।
करो ए बे स्वस्मनी सेवा रे,
बीजे नमस्कार करी लेवा रे ॥

- निष्कुलानंद काव्य

नोती दीठी, तनो ती सांभरी रे,
प्रगटावी एवी पुनि पुरुषोत्तम प्रगटी रे ।

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने जीव के मोक्ष हेतु अनोखी प्रणालिका बनाई है । धर्मकुल में से अहमदाबाद-एवं वडताल की गद्दी पर स्थापित आचार्य द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों में सदा प्रगट रुप से हमारा निवास होगा ऐसा श्रीजी महाराज ने वचन दिया है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री द्वारा अमेरिका में सर्व प्रथम संवत १९८१ में प्रहलादभाई वी. पटेल (करजीसणवाळा) न्युजर्सीवाला के निवास स्थान में मूर्ति प्रतिष्ठा करके श्रीहरि कृष्ण महाराजकी मूर्ति प्रसन्न होकर नडीयाद के श्रीहरिकृष्णभाई शाह को दी थी । जिस के घर में अचानक शोट सर्किट होने से आग लग गयी थी, परिणाम स्वस्म सम्पूर्ण घर खाख हो गया । उस समय घर में कोई था नही । लेकिन भगवान की मूर्ति जैसे की तैसी ही थी । सिंहासन भी जल गया था । यही प्रतिष्ठित मूर्ति का चमत्कार है । जिस मूर्ति का आज भी दर्शन हो सकता है ।

वैसी ही सिंहासन के बीच की "श्रीसहजानंद स्वामी की मूर्ति" प्रहलादभाई के घर यें है । जिस मूर्ति को युवक मंडल सात दिन की पूजाविधि में ले गये थे विदाई के समय सभी ने भगवान के मुख मंडल पर पसीना देखा था, जब उसे छाया में ले गये तो पसीना गायब हो गया । वह मूर्ति आज भी प्रहलादभाई के घर में है ।

प.पू.ध.धु. पूज्य बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने यु.एस.ए. में सर्वप्रथम मंदिर न्युजर्सी में विहोकन शहर में संम्वत् १९८७ में स्थापित किया । भगवान श्री स्वामिनारायण की एक चक्षु की दिव्य मूर्ति बडी चमत्कारिक है । आज भी उसमें महाराज दिव्य स्म से विराजमान रहते हैं । ऐसा भासित होता रहता है । इस मूर्ति की रचना करने वाला श्री बाबुबाई सोनी कहता है कि ऐसी चमत्कारिक मूर्ति पुनः बहुत प्रयास करने पर भी आजतक बना नहीं पाया । ऐसी मूर्ति पूज्य महाराजश्री ने केलिफोर्निया नोरवोक सीटी में स्थापित की है । श्रीहरिकृष्म महाराज की प्रतिष्ठाविधि करने के बाद कान में मंत्र बोलकर अभिषेक कर रहे थे उसी समय महाराजश्री के उत्तरीयवस्त्र को अपने हाथो से पकड लिये । पू. महाराजश्री भगवान के हाथ में से अपने उत्तरीय को छुडवाया था । यही प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों का चमत्कार है ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की सेवा में श्रीहरिकृष्ण महाराजकी जो मूर्ति है वह श्रीजी महाराज स्वयं अयोध्याप्रसादजी महाराज को पूजा के लिये दिये थे । इन्हीं मूर्ति को लेकर एक बार महाराजश्री फ्लोरिडा में संत हरिभक्तो के साथ किसी हरिभक्त के घर पदार्पण करके मूर्ति को गाड़ी में आगे रखे थे, पुनः कही जाना हुआ मूर्तिको वहीं छोड़कर चले गये । जब लौटकर आये तो देखे कि चारो दरवाजे खुले है, जब कि इतनी भींडवाली जगह में पार्किग, जहाँ से थोडी भी कोई चोरी नहीं हुई । तब पू. महाराजश्री ने कहा महाराज को कार में गर्मी लगती रही होगी जिस कारण दरवाजे खोलकर पवन ले रहे होंगे । वह मूर्ति आज भी प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की पूजा में है । वनविचरण के समय जिन शालीग्राम की मूर्ति को सेवा में रखते थे वे भी साथ ही रहती हैं ।

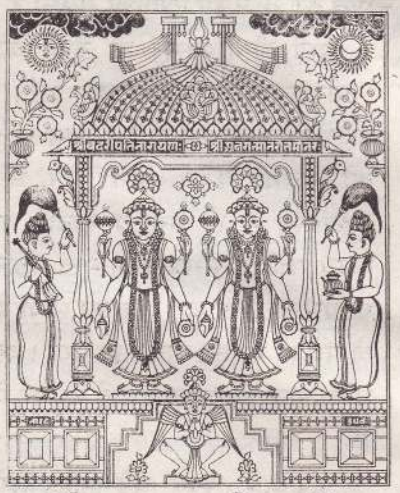
यही चमत्कार धर्मवंशी आचार्य में तथा धर्मवंशी आचार्य द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियो में प्रत्यक्ष देखने में मिलता है । इन्हीं के द्वारा जीव मात्र का कल्याण सम्भव है । क्योंकि इन्हीं में प्रगट भगवान रहते हैं । अन्यथा ब्रह्माजी भी कहते हैं कि जगन्नाथपुरी के मंदिर में मुझे मूर्ति दिखाई नहीं देती । कहाँ है भगवान ? शिवजी कहे प्रसादी भात नो दामो के देखाय ।

मूर्ति पूजा की महिमा

नित्य कर्म में स्नान, प्रातः स्मरण, स्वेष्टदेव पूजन आता है । प्रत्येक घर में एक छोटा सा मंदिर तो होता ही है । घर में पर्याप्त जगह के अभाव में भी जहाँ भी थोडी जगह मिलती है वहाँ अवश्य अपने इष्टदेव की प्रतिमा या चित्र दीवाल पर लटका करके भी पूजन करते है । यही आस्था है । मंदिर अर्थात् मूर्ति पूजा जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी चित्तवृत्ति को एकाग्र करपाता है । लेकिन इस विधि को कितने लोग निंदा की दृष्टि से देखते है, सायद उन्हे इस विधि की वैज्ञानिकता का रहस्य ज्ञात नहीं है । मनुष्य कैसेसुखी रह सकता है ? मनुष्य का यहलोक तथा परलोक दोनो कैसे सुधरे इन सभी का समाधान मात्र मूर्ति से हो जाता है । मूर्ति पूजा से मन एकाग्र होता है । स्वस्थता का अनुभव होता है । इसके साथ सुखी होने का एकमात्र उपाय मूर्ति पूजा है ।

मूर्ति पूजा के विषय में बहुत स्पष्ट है जीवन की परम शांति । मनुष्य स्नान करके पवित्रता धारण करता है । बाद में भगवान की पूजा करता है । उसके पहले पुष्प, चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि को एकत्रित करता है । ठाकुरजी का अभिषेक करके पूजन करता है, पाठ करता है । इन सभी पूजा की समाग्री को एकत्रित करने के लिये भाव होना आवश्यक है । श्रद्धा हो तो भगवान पूजा स्वीकारते है । जैसे सेवरी ने वर्षो तक भगवान के लिए झाड़ू लगाती, फूल लाती नैवेद्य लगाती, सम्पूर्ण दिन की क्रिया अपने प्राण प्यारे श्रीराम की प्रतिक्षा में समय निकालती । यही प्रत्यक्ष मूर्ति पूजा का रहस्य है ।

यद्यपि मूर्ति पूजा कठिन है - क्योंकि बाह्य शुद्धि के साथ अन्तर



शुद्धि आवश्यक है । जब मूर्ति पूजा में मन लगता हो उस समय टी.वी. में कोई सीरीयल आ रही हो तो कुछ क्षणो के लिये मन वहाँ अवश्य जाता है, इसी तरह आकर्षण की जगह में जायेगा, कोई देखी-सुनी जगह में भी मन जाता है, लेकिन मूर्ति पूजा मन को केन्द्रित करने का एकमात्र साधन है । अतः तन, मन, धन से अपने मन मंदिर में या घर के मंदिर में, या प्रतिष्ठित मंदिर में जागर मूर्ति पूजा अवश्य करनी चाहिए । मनसा-वाचा-कर्मणा यदि मूर्ति को अपनायें तो निश्चित हीअपना बाह्य जगत में फिरने वाला मन अन्तर्मुखी हो जायेगा, तब जीवन में आनंद ही आनंद दिखाई देगा । जब मनुष्य का पुरुषार्थ हर प्रकार से निष्फल होता है तो वह मूर्ति पूजा के माध्यम से सफलता की तरफ बढने लगता है । पूजा भी एक वैज्ञानिक तत्व है । पूजा के लिये जो वस्तु प्रयोग में लाई जाती है वह सभी पांच तत्वो से बनी है - पृथ्वी जल तेज आकाश, वायु । जैसे चंदन-पुष्प इत्यादि सुगंधित द्रव्य पृथ्वी तत्व से प्राप्त होता है । गंधवती पृथ्वी ऐसी व्याख्या की गयी है । जल ठाकुरजी के स्नान के लिए उपयोगमें आता है फूंकने के समय हवा की जरुरत होती है । शंख में से जो शब्द निकलता है वह आकाश का धर्म है । शब्द गुणकम् आकाशम्'' । इस प्रकार पांच महा भूतों द्वारा ठाकुरजी की सेवा की जाती है । अपनी शरीर भी पांच तत्वों से निर्मित है । इसलिये परमात्मा की उपासना इस पंच भौतिक शरीर द्वारा शरीर अर्पण करके अर्थात् आत्म समर्पण करके एक निष्ठ होकर अपने इष्टदेव की पूजा करनी चाहिए, इसी में परमात्मा की प्रसन्नता है । प्रतिदिन प्रातः से सायम् तक जो भी कार्य हो वह परमात्मा के लिये होना चाहिए, तभी इस शरीर की प्राप्ति का उपयोग सार्थक हो सकेगा । भगवान कहाँ नहीं है, सभी जगहो पर है, ''हममें तुममें खड्ग खंभ में सबमें व्यापी राम'' । गीता में भी कहा गया है कि ''वासुदेव इदं सर्वम्'' इस प्रकार की भावना रखकर भगवान की या अपने इष्टदेव की मूर्ति पूजा में रमकर प्रतिदिन सेवा करनी चाहिए ।

इसलिये प्रिय भक्तों । यदि आप को भी मोक्ष की चाहना है, सुख शांति की चाहना हो तो अवश्य अपने इष्टदेव की मूर्ति घर में रखकर अवश्य पूजन करना ।

- स्वा. भक्तिकिशोरदास

(श्री स्वा.ना. स.वि. जेतलपुर)

श्रीजी महाराज की व्यूह रचना

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

श्रीजी महाराज की व्यूह रचना बड़ी निराली थी । कभी वे दो चार मनुष्यो को साथ लेकर निकल पडते । रातोरात कितनी मंजिल तय करलेते । कभी अकेले ही चल देते । कभी दो सौ चार सौ संतो को साथ में लेकर तथा पार्षद एवं हरिभक्तों का झुन्ड लेकर निकल पडते । कभी काठी राजपूतो की सेना लेकर निकड पडते । जहाँ पड़ाव करते वहाँ जैसे मानव का मेला लगजाता था ।

उस जमाने में अंग्रेज अधिकारी भी इन अन्तर्यामी के व्यूहरचना को नोटकिये है। आश्चर्य की बात तो यह है कि महाराज की धर्म सेना जिधर निकलजाती उधरका वातावरण अपने अनुकूल बनता जाता । किसी दुष्ट व्यक्ति की कोई सिकायत लेकर आवे तो महाराज उसका भेद बुद्दि से मार्ग निकालते थे । प्राय: हथियार की जरुरत ही नहीं पडती थी । महाराज अपने संकल्प मात्र से सामने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व को नीचा कर देते थे ।

महाराज संतो को विशेष कार्यभार देकर गाँव गाँव में भेंजते थे । महाराज की आज्ञा से बडे संतो को साथ जाना पडता था । एकबार महाराज अहमदाबाद जा रहे थे उस समय मुक्तानंद स्वामी को कहे कि आप जहाँ सकियेगा वहाँ एकांत होना चाहिए, बहुत व्यवस्था की जरुरत नहीं, नीति, नियम जहाँ बनी रहे वहीं सकियेगा ।

मुक्तानंद स्वमी महाराज की आज्ञा शिरोधार्य करके चल दिये, दरियाखान के घुम्मट के उत्तर तरफ जो वनराई थी वहीं संतो का पडाव डाला गया । वहीं पर श्रीहरि का नाम लेकर अभय निद्रालिये ।

इसके बाद एक मंडल को महाराज ने धांगध्रा भेंजा । उन दिनों प्रत्येक स्थलों पर बावाओं का (साधुओ) का साम्राज्य था । धांगध्रां में एक खाखी बाबा का "राम महल" था । वहाँ पर मंडल के साथ भजन कीर्तन करते हुए महाराज भीतर घुस गये । साधु के स्थल में साधु को निमंत्रण-आमंत्रण की क्या आवश्यकता ?

वाद्य-मृदंग की आवाज सुनकर महंत गोपालदासजी बाहर आ गये । कहाँ की मंडली है । उत्तर दिये "कच्छ देश से आ रहे हैं ।" बाबाजी खूब आनंदित हुए । रहने खाने की उत्तम व्यवस्था की गयी। संत स्वयं रसोई तैयार किये तथा ठाकुरजी का भोग लगाये । बाबाजी अपने संत मंडल के साथ श्रीराम जय राम जयजय राम की धुनि करवाये । बाद में अपने निवास स्थान पर जाकर सो गये । परंतु महाराज अपने संतो के साथ उसी जगह पर आकर स्वामिनारायण स्वामिनारायण की धुनि आरम्भ कर दिये । उधर बाबा लोगों की नींद उड गयी । द्वेष भाव के कारण स्वामिनारायण का नाम सुनते ही क्रोधाग्नि जल उठी । आत्मानंद स्वामी, रामानंद स्वामी के बाद जब से उद्धव सम्प्रदाय की धर्मधुरा सहजानंद स्वामी के ऊपर आयी तब से बाबा लोगों की बाजी बदल गयी । परंतु इन संतो ने यहाँ के बाबा के हृदय को जीत लिया ।

वहाँ के बाबाओं ने गोपालदासजी को समझा बुझाकर साधु मंडल को बाहर निकालने को कहा । लेकिन संत निकले ही नहीं । मुक्तानंद स्वामी का मंडल जब अहमदाबाद गया तब महाराजकी आज्ञा में गया । महाराज की आज्ञा का पालन करते रहे । इसी प्रकार यहाँ धांगध्रा में अग्रगण्य संत ने कहा कि महाराजने आज्ञा किया है कि तीसरे दिन यहाँ सेनिकल जाना "बाल हठ स्त्री हठ, राज हठ, योगी हठ ।

गोपालदासने धांगध्रां के नरेश अमरसिंह को सिकायत किया फिर भी कुछ हुआ नहीं । साधु मंडल जमा तो जमा ही रहा । चौथे दिन संत मंडल महाराज के पास आ गया । महाराज ने कहा हमारे साधुओ का अपना रंग अनोखा है। इन लोगों ने सत्संग के नियम को रखा है । आज हम खूब प्रसन्न हुए हैं । संकट आवे तब शांत रहना चाहिये । मन से सामने वाली व्यक्ति पर स्वयं प्रहार नहीं करना चाहिए । अस्त्र-शस्त्र से नहीं शब्द से भी प्रहार नहीं करना चाहिए । सामने वाले व्यक्ति को किस प्रकार जीता जाय, उसके हृदय में किस प्रकार परिवर्तन किया जाय यही कला जिस में हो, वही उसका अमोघ अस्त्र है ।

संत मंडल महाराज के पास पहुंचे उसके पहले महाराज अपने अन्तर्यामी पना से सभी यथार्थ को जान चुके थे ।

दयालु देव श्री नरनारायणदेव

- साधु गोपालचरणदास गुरु प्राणजीवनदास (श्री स्वा.ना. स.वि. जेतलपुर)



महाराज ने आचार संहिता में आज्ञा की कि "मेरे भक्त सायंकाल मंदिर में अवश्य जायें। भगवत् नामोच्चाण - कृष्णनाम संकीर्तन अवश्य करें । श्रीजी महाराज ने हमारे ऊपर बहुत कृपा की है । परिणाम स्वस्म हमारे कल्याण के लिये नव-नव मंदिरो का निर्माण करके दिये । इन्ही मंदिरो से मनुष्यमात्र का कल्याण होना सम्भव है । जिस प्रकार कोई बाजार से शाकभांजी लाकर टिकाने के लिये या ताजी रखने के लिये फ्रीज का उपयोग करता है, ठीक यही स्थिति मनुष्य अपने मन को तरो ताजा रखने के लिये फ्रीज स्मी मंदिर का उपपयोग करता है। इसी को ध्यान में रखकर भगवान स्वामिनारायण ने नव मंदिरो का निर्माण करवाया जिसमें सर्व प्रथम भरतखंड के अधिपति महाप्रभु नरनारायणदेव का मंदिर निर्मित करवाया । जिस में स्वयं महाप्रभु को बांहो में भरकर प्रतिष्ठित किया । श्रीजी महाराज ने आनंदानंद स्वामी को आज्ञा की कि हे स्वामी ! आप कर्णावती नगर में राजा से जमीन मांगकर मंदिर का निर्माण करवाइये । महाराज की आज्ञा को शिरोधार्य करके अमहदाबाद नगर में विशाल मंदिर का निर्माण कराकर महाराज को संदेश दिये कि आप की आज्ञा से मंदिर का कार्य पूर्ण हो गया है । तब महाराज कर्णावती में आकर फाल्गुन शुक्ल तृतीया सम्वत् १८७८ ता. २७-२-१८२२ के शुभ दिन वेदोक्त विधि से गोविंद आदि ब्राह्मणो द्वारा महाराज ने श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया । इन मूर्तियों में महाराज ने अपने तेज को स्थापित किया । बाद में विशाल सत्संग सभा में महाराज आशीर्वाद देते हुए कहे कि ये वही नरनारायणदेव हैं जो बद्रिकाश्रम में विशाला के नीचे तप करते है महाराज शिक्षापत्री में कहते है कि - "सेवा मुक्तिश्च गम्यताम्" । सभा में महाराज ने कहा कि जो नरनारायण देव की सेवा भक्ति करेंगे उनका हम कल्याण करेंगे । नरनारायण देव दोनो एक ही है "नरश्चासौ नारायणश्च" । भगवान नरनारायण देव की अपने ऊपर अनहद कृपा है । पूज्य बडे महाराजश्री भी सभा में बार बार कहते रहते है श्री नरनारायणदेव ही सर्वोपरि देव हैं । इन्ही की सेवा पूजा करने से आत्मीय सर्व विध कल्याण हित है।

श्रीमद् भागवत में कहा गया है कि श्री नरनारायणऋषि बद्रिकाश्रम में रहकर तप करते है जिससे सभी भरतखंड वासियों का कल्याण होता है । मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद श्री नरनारायणदेव महाप्रभु को पांच दंडवत् प्रणाम किये, फिर दूसरे दिन छ दंवडत किये। स्वामीने पूछा महाराज आज आप छ दंडवत क्यों किये । तब महाराज ने कहा एक दंडवत् मैं अपने भक्तों के लिये करता हूँ। इसी प्रकार नरनारायणदेव भी तप अपने भक्तों के लिये करते हैं । उन्ही राजाधिराज भरतखंड के अधिपति की महाराज कर्णावती नगरमें प्रतिष्ठा करके सत्संग समाज का कितना उपकार किया है। ऐसे परमकृपालु महाराज के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि महाराज के साथ परम पिता परमेश्वर नरनारायणदेव की महिमा निरंतर हम समझकर अपने जीवन में उतारते रहे, जिससे हमारा इसलोक एवं परलोक दोनो सुखी हो सके ।

सत्संग सुरभि :

मुक्त तो आज हुआ हूँ !

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला

गुरुरामानंद स्वामी के पास जब से धर्मधुरा सम्हाले तबसे एक घडी के लिये भी सहजानन्द स्वामी बैठे नहीं । संतो के साथ मांगरोल, जेतपुर, धोराजी तथा अन्य स्थलों पर सतत विचरण करते रहे । अधर्मसर्ग का उच्छेद करने के लिये रात दिन एक कर दिये । समाज के सामने अपने अलौकिक प्रताप से मोक्ष का मार्ग खुला छोडदिये ।

यह प्रताप ऐसा अद्‌भुत था कि मतपंथियो का मत ठन्ढा पड़ गया । अपार गृही-त्यागी श्रीहरि के अनुयायी बनने लगे । जैसे लगरहा था कि इस पृथ्वी पर कोई अलौकिक योगिराज आ गया हो ।

इस तरफ मुक्तानंद स्वामी भुज नगर में रह रहे थे । ''श्रीजी महाराज जिस किसी को भी समाधिस्थ कर देते हैं, यह सुनकर स्वामी थोडा खिन्न हो गये । श्रीहरि के प्रति उन्हें थोडा सा मनुष्यभाव आ गया ।

एक सभा में श्रीजी महाराज शिष्यों के साथ पलंग पर बैठे थे इसी समय भुजनगर से मुक्तानंद स्वामी संतो के साथ भुज नगर से आ गये । हाथ में रंगीन छडी थी । मुक्तानंद स्वामी को देखते ही श्रीजी महाराज दौड़पड़े और जाकर चरण में गिर पड़े । स्वामी हाथ से उन्हे उठाकर गले लगाये । महाराज के स्पर्श से मुक्त मुनि की शरीर में शीतलता व्याप्त हो गयी । महाराज स्वामी को पलंग पर बैठाये । इस प्रकार का व्यवहार देखकर स्वामी के मन में संताप होने लगा । इसके साथ ही स्वामी के मन में नाना प्रकार के विचार उठने लगे । थोडी देर के बाद रसोई तैयार हो गयी और मुकुंदवर्णी भोजन के लिये बुलाने आये । महाराज तत्काल खडे हो गये, अपने साथ मुक्तमुनि को लेकर भोजनालय में गये । अपने भोजनासन पर मुक्त मुनि को बैठाये । स्वयं बगल में बैठ गये । स्वामी को पहले भोजन परसवाये । बाद में मुनि से कहने लगे ''आप तो बडे है हम अभी बालक हैं । साथ में जिमना उचित नहीं है, पहले आप प्रसाद पा लीजिये बाद में हम लेंगे । यही सदाचार भी है ।

स्वामी ने कहा ''जो अधिक वृद्ध हों तथा जो बालक हो तो साथ भोजन करते हैं । इसलिये इस में कोई आपत्ति नहीं है । इस प्रकार हमने श्रीहरि से कहा । श्रीजी महाराज के इस वर्तन से सभी संतो के मन में आश्चर्य होने लगा । महाराज आज ऐसा क्यों कर रहे हैं ? सभी को यह प्रश्न हो रहा था ।

''स्वामी को हमारे विषय में मनुष्य भाव आ गया है । जीव मात्र का कल्याण ही जिसका लक्ष्य हैं, तो मुक्त मुनि तो उत्तम जीव हैं ?''

भोजन करने के बाद सभी लोग निवास स्थान पर आये । लेकिन स्नान करने के बहाने से मुक्तानंद स्वामी केवल श्रीहरि को अपने साथ लेकर जेतपुर से पूर्व मेघवती नदी बहती है वहाँ लेकर चल दिये, लेकिन हरिभक्तों के दश-बारह लड़को को साथ लेकर गये । कार्तिक शुक्ल दशमी का दिन था । मुक्तानंद स्वामी सत्संग का हित विचार कर श्रीहरि को एकतरफ लेजाकर डांटने लगे - ''रामानंद स्वामी आज इस जगत में नहीं है, उनके गुरु आत्मानंद स्वामी महान् तेजस्वी थे, वे षट्‌चक्र भेदन की क्रिया भी जानते थे । दूसरे अनेक रामकृष्णादिक अवतार हुए है, तो क्या आप उनसे भी अधिक है क्या ? आप को अब कोई पूछने वाला नहीं है ? मुक्तानंद स्वामी की वात को बडे भाई की आज्ञा समझ कर हाथ जोडकर कहने लगे कि आपकी आज्ञा हो तो मैं कुछ कहूँ । मुक्त मुनि ने कहा हाँ आपके मन में जो भी हो आप उसे कहो । श्रीहरि मंदमंद मुस्कान के साथ गंभीर स्वर में बोले । आप निरमल मन है आपका जीवन स्वच्छ कपडे जैसा है, आपके पुण्य से हम टिके हुए है । हमें सत्यवात अच्ची लगती है । अन्धकार हो लेकिन सूर्य के विना अन्धकार दूर नहीं होता । सूर्य के स्थान पर धर्म की बात है । धर्म को हम पिता मानते है । धर्म की पत्नी को हम माता मानते हैं । भक्ति के पुत्र ज्ञान-वैराग्य हमारे भाई है । अधर्म वंश कामूलोच्छद करने के लिए हम

प्रगट हुए हैं । फिर भी आप जैसा कहें वैसा हम करने को तैयार हैं । हमें तो मोक्ष की चाहना है ।

श्रीहरि की इस प्रकार की आर्द्र वाणी सुनकर मुक्त के नेत्र बह चले । वाणी गद् गद् हो गयी । श्रीहरि के प्रति जो भाव था वह मानो बहने लगा । वे अचेतन जैसे बन गये । मुक्त मुनि को शांत करते हुए श्रीजी महाराज ने कहा ''यह सब रामानंद स्वामी की इच्छा से हो रहा है । वे ध्यान द्वारा अपना दर्शन देते हैं । भगवान के अनंत प्रताप को यहाँ दिखाते हैं । इसमें हमारा कोई दोष नहीं है हमारा दोष हो तो क्षमा कीजिएगा संत का हृदय पुष्प के समान कोमल होता है । इतने में बालजी एवं लक्ष्मण दो बालकों को श्रीहरि के देखने मात्र से समाधि हो गयी । स्वामी यह देखकर आश्चर्य युक्त हो गये । स्वामी दोनो की शरीर देखे तो अचेतन जैसे हो गये थे । श्रीहरि उन दोनो को जल में डुबा दिये और मुक्त मुनि से कहे कि थोडे समय के बाद आप इन्हे पानी से बाहर निकलवा दीजियेगा ।

जल में चार घंटे हो गये तो स्वामीने बालको कों बाहर निकाला । रामानंद स्वामी का ध्यान किया । दोनों को जगाने का प्रयत्न किया । नाम लेकर जोर-जोर से चिल्लाये तोभी सभी जगे नहीं । ६ घंटे के बाद महाराज आये, अभी भी उसी अचेतन मुद्रा में देखकर हंसने लगे ।

स्वामी आप आज्ञा करें तो इन्हें जगायें । इतना कहकर अपने नेत्र को उनके नेत्र में डाले की तुरत ही समाधि से बाह्य आ गये । महाराज ने बालकों से पूछा ''मुक्तानंद स्वामी जब बुला रहे थे तब क्योंनहीं बोले ?''

तब बालको ने कहा ''उस समय हमअक्षरधाम में गये थे ।'' वहाँ मुक्तानदं स्वामी को बैठा देखा । बालकों की बात सुनकर मुक्त मुनि का मन बेचैन हो उठा और वे हाथ पैर धोकर वृक्ष के नीचे बैठकर रामानंद स्वामी का ध्यान करने लगे ।

वहाँ रामानंद स्वामी प्रत्यक्ष आकर कहने लगे ''हे स्वामी आप कहाँ यहाँ आकर भूल गये ? महाराज तो हमारे भी स्वामी है । इनकी सेवा हमें दुर्लभ है जो आपको सरलता से मिली है । इसलिये मन, कर्म, वचन से इनकी सेवा कीजिये । अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति है । इसमें कोई संशय की बात नहीं है । हम डुगडुगी बजाने वाले थे, सही कलाकार तो ये ही है । इतना कहकर अन्तर्ध्यान हो गये । मुक्तानंद स्वामी प्रेममग्न हो गये । नारायण सोनी के घर श्रीहरि तथा संत पधारे है । मुक्तानंद स्वामी श्रीहरि के लिये सुंदर पलंग बिछाये उसपर सुंदर चादर-तकिया सेंट केशर अगरबत्ती फूल धूप दीप से पूजन करके उस पलंग पर बैठाये । बाद में तो सैंकडो दीपक प्रगट करके मुक्तानंद स्वामी प्रेममग्न होकर नीचे अनुसार आरती उतारने लगे । जय सद्गुरु स्वामी, सहजानंद दयालु (२) बलवंत बहुनामी.... जय सद्गुरुस्वामी, आ अवसर करुणानिधि करुणा बहु कीधी, मुक्तानंद कहे मुक्ति (२) सुगम करी सीधी..... जय सद्गुरु स्वामी...

स्वामीने यह आरती पूर्ण किया और श्रीहरि के चरणों में नत मस्तक हो गये । आंखो में से अश्रुधारा बह चली । श्रीहरि के सन्मुख हाथ जोडकर खडे हो कर स्तुति करने लगे । हे भगवान आप बाल मित्र है, मैं भूला हुआ हूँ । मेरे साथ प्रेम करके हमें भुला दिये । उसी समय रामानंद स्वामीने सत्य वात कही थी । लेकिन किसी पाप के कारण अन्तर में अन्तराय उत्पन्न हुआ । उसी अज्ञान के कारण आज यह दसा हुई जिस में से आज आपने मुक्त किया । अभी तक अमुक्त था । अबुध था। अज्ञानी था । आपके गुण का हम क्या गान कर सकते हैं । हम अवगुणी हैं । पुनः अब यह दोष नहीं आयेगा । आपकी माया में मैं भटक गया था । अब आप उठालीजिए । ब्रह्मादिक देव भी आपकी माया में भूले हैं । हम तो पामर हैं । अहिंसामय अनेको यज्ञ किया हो तो भी आप की प्राप्ति मुश्किल है । महासागर में जैसे जहाज सुख का साधन है । जहाज जो छोड़ दे वह फंस जाता है । ठीक यही स्थिति मेरी है लेकिन मैं अज्ञान के कारण फंस गया था । अब ज्ञान हो गया है । इस प्रकार मुक्त मुनि की स्तुति सुनकर श्रीहरि अत्यन्त प्रसन्न हुए ।

श्रीहरि ने समग्र सभा की तरह करुण दृष्टि की बाद में बोले ''मुक्त मुनि इस ब्रह्मांड का विस्तार पचास योजन है । इसे कोई देखे तो आदि

अन्त का पता नहीं चलेगा । इसी प्रकार जो मेरी शरणागति हों वे सब विसार कर मेरी शरणागति स्वीकार करें । माया, मोह, प्रपंच, कपट, छल इत्यादि का त्याग कर श्रीहरि के दास का दास बन कर जो आवे वह निर्विघ्न मुझे प्राप्त करता है । यश को प्राप्त करता है । यदि इनसे विमुख हुआ तो अपयश का भागी होता है । मोक्ष का काम तो और भी अधिक कठिन है । सतर्क होकर, जागृत होकर एक निष्ठ होकर साध्य हो सकता है । गुरु विचारकर करना एवं संग भी विचार कर करना जिससे फंसने वाली बात ही नहीं आवे ।

इतना बोध देकर श्रीहरि मौन हो गये । प्रगट स्वरूप में दृढ निश्चय ही मोक्ष मार्ग की फलश्रुति है । इस प्रकार सर्वोपरि की वाणी सुनकर सभी आश्चर्य मुग्ध हो गये ।

मुक्तानंद स्वामी के साथ सभी संत एवं भक्तगण को सद्गुरु स्वामी के रूप में अलौकिक दर्शन हुआ, इस के साथ मुक्त मुनि के मुख से निकली प्रभु की आरती आज सत्संग समाज के लिये "अभिभूत आरती बन कर रह गयी है ।"

श्रीहरि के दृढ आश्रय से संसार समुद्र अवश्य पार किया जा सकता है । मानो श्रीहरि ने यह सुगम सिद्धि आज वहा दिया ।

मुक्तानंद स्वामी के आनंद की कोई सीमा नही रही इसी लिये लिखे "मुक्त तो आज थयो छुं" इसके साथ

रडी मुडी पाम्या रोकडी रे, नहीं
उधारानी वात ।
अमलभर्या सहु उच्चरे परं प्रभु
मल्या साक्षात् ॥



धनश्याम की सेवा

चालो ने करिये घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा.....
एने धराईये मिठाई ने मेवा, एवा घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा..... (१)
नाम छे नानुं महिमा छे,
मोटो अवतारना अवतारी छे ए तो,
जेनुं सर्वोपरि अक्षरधाम छे, एवा घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा..... (२)
भक्तना हृदय मां सदाये वसता,
संतो जेना सदा ध्यानज धरता,
प्रगट्या पोते छपैयाधाम, एवा घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा..... (३)
भवो ते भवना फेरा ते टाणवा,
जन्म मरण, लक्ष चौराशी भुलाववा,
करीये धनश्यामने कालावाला, एवा घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा..... (४)
ब्रह्माजी जेवा भिखारी थईने,
माछलु थई मीठी मांगीने,
करे सेवां मले तेने मेवा, एवा घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा..... (५)
रंग महोल ना घनश्याम रंगीला,
प्रत्यक्ष आवी मारा हृदयमां वसिया,
रहे प्रहलादना नेणामां सदा हंसता, एवा घनश्यामनी,
चालो ने करिये सेवा..... (६)

- प्रहलादभाई वी. पटेल (न्युजर्सी,यु.एस.ए.)

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सुख का मूल

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

बाजार में नाना प्रकार के खिलौने मिलते है । इसमें दिमागी कसरत के भी खिलौने मिलते है । जिस प्रकार के खिलौने बनाने हों उस प्रकार के यंत्र द्वारा वे निर्मित हो जाते हैं । जैसे यंत्र का आकार उस प्रकार के शुक, मयूर, गाय, घर, नदी, पशु इत्यादि बन जाते हैं । एक बालक बहुत चालांक था । वनाने की प्रक्रिया उसकी सबसे तेज थी । एकबार उसके पिता को हुआ कि, बेटे की बुद्धि का परीक्षण करना चाहिए ।

पिता के घर में एक बहुत पुराने जमाने का नक्शा था । वह थोडा फटा हुआ था, पिता थोड़ा अधिक फाड डाला । बाद में बेटे से कहा इसे थोडा व्यवस्थित कर डालो न । बडी मुश्किल का काम था । यह तो दुनियां का नक्शा था । सही जगह पर व्यवस्थित करना था । अमेरिका, इंग्लैड, अफ्रिका, आस्ट्रेलिया नाना देशों को अलग अलग यथा स्थान पर व्यवस्थित करना कठिन था । फिर भी वह बालक अपनी चतुरता से पांच मिनिट में ही सभी फटे टुकडो को यथोचित स्थान दे दिया । बाद में पिताजी को लाकर दे दिया । बाप बडा प्रसन्न होकर कहा वाह । अच्छा तैयार हो गया । इतनी चतुरता तुम्हारे में कहां से आयी । जिस नक्से को मैं फाड दिया था उसे तुम इतनी सरलता से बना दिया । मुझे तुम पर गर्व है । बेटा ! अब तूं बता इतनी जल्दी कैसे बना दिया । बेटाने कहा पिताजी ! इस नक्शे के पीछे पति, पत्नि एवं दो बालकों से युक्त चित्र था । मेरे दिमांक में आया कि पीछे के भाग से जोडे तो व्यवस्थित एवं सरल ढंग से थोडे समय में तैयार हो जायेगा । पीछे के चित्र का आधार लिया और आगे का भी भाग हूँबहू बन गया ।

किसी के पति, पत्नी, बालक के बीच के सम्बन्ध को जोडे तो सारी दुनियां एक हो जाय । समझ गये न ? सम्पूर्ण दुनियां का नक्शा एक हो सकता है लेकिन कब ? हम सम्पूर्ण परिवार को एक सूत्रता में जोड सकें तो । अपने सत्संग में एक कहावत है कि "एक जीव को सत्संगी बनाया जाय तो सम्पूर्ण दुनियां को तरजाने का फल मिलता है ?" क्योंकि सत्संग ही सभी सुखका मूल है । जिसके जीवन में सत्संग हो, एकता हो, सदभाव हो, संस्कार हो, वहाँ सद्‌गुण निवास करता है । इसीलिए तो वचनामृत में स्वामिनारायण भगवान से प्रश्न पूछा गया कि जीव का मोक्ष द्वार कैसे खुलता है । इस उत्तर में भगवान स्वामिनारायणने एक श्लोक कहा -

प्रसंगमजरं पासमात्मनः कवयो विदुः ।
स एव साधु सुकृतो मोक्षद्वारमपा वृतम् ॥

भगवान के एकांतिक साधु का सत्संग करने से मोक्ष का द्वार खुल जाता है । वह जीव इस लोक एवं परलोक में सुखी होता है । इसलिये एकता एवं सत्संग सभी सुख का साधन है ।

•

ऐसा अपराध नहीं करना

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

सूर्यवंश में दिलीप नाम के राजा थे । दिलीपराजा का परिवार धार्मिक था । दिलीपराजा बडे नीतिवाले थे । राज्य की प्रजा कैसे सुखी हो इसके लिए सतत प्रयत्नशील रहते थे ।

एक दिन राजा बडी जल्दी में थे । किसी काम में व्यस्त थे । इसलिए अपने मंत्रियों के साथ घोडे पर सवार होकर नगर से बाहर निकल रहे थे । उसी समय स्वर्ग से नन्दिनी भी नीचे उतरी । जिस मार्ग से राजा जा रहे थे, उसी मार्ग से नन्दिनी आ रही थी । दिलीपराजा बडे संस्कारी एवं धार्मिक थे । उनके हृदय में सभी के लिये आदर था । लेकिन जल्दी के कारण नन्दिनी का चरण स्पर्श किये विना आगे बढ गये । गाय का अनादर हो गया । इसलिये नन्दिनी गायने राजा दिलीप को श्राप दे दिया । एक मात्र छोटी भूल के कारण राजा दिलीप के लिए बडा परिणाम हो गया। परिणाम स्वरूप श्राप में सन्तान के अभाव का श्राप दे दिया । राजा दिलीप पुत्र प्राप्ति के लिए नाना प्रकार के यज्ञ कर वाये, पुत्रेष्टि याग करवाये । अनेक ब्राह्मणों को गौदान, भूदान, अन्नदान दिये, फिर भी सन्तान लाभ नही हुआ । बड़े दुःखी हुए । कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा था । अंत में अपने गुरु वशिष्ठ के आश्रम में जाकर मिलने का निश्चय किये । उनके आश्रम में जागर उन्हे प्रणाम करके अपने विचारों को व्यक्त किया । वशिष्ट मुनि अपनी योग विद्या द्वारा जान लिये कि नन्दिनी गाय के श्राप के कारण ही संतान में रुकावट है । गुरुवशिष्ठने राजा दिलीप से कहा कि आप नन्दिनी का अपराध किये हैं । इस लिये आपको संतान प्राप्त नहीं हो रही है । राजा दिलीप ने गुरुजी से निवेदन किया कि इस की क्या उपाय है । तब गुरुजी ने राजा रघु को एवं उनकी पत्नीको गाय की सेवा करने को कहा ।

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १९

।। भक्तिसुधा ।।

सुख कहाँ है ?

- सां.यो. नर्मदाबहन गुरु बचीबा
(जेतलपुर-हवेली)

जिस परमात्मा के नाम स्मरण से मनुष्य के सभी अशुभ नष्ट हो जाते हैं तथा शुभ का विस्तार होने लगता है। वही परमात्मा एक मात्र मंगलस्य है। उस परमात्मा को नहीं छोड़ना चाहिए, जो छोड़कर जगत के पदार्थो में मन लगाते है वे नाना प्रकार के दुःखो से घिर जाते हैं। इसीलिये शास्त्र समझाते हैं कि स्वयम् जीवन किस प्रकार जीना चाहिए -

तुलसी जग में आप के,
करलीजिये दो काम।
देने को टुकडा भला,
लेने को हरि नाम ॥

सुख कहाँ है ? इसकी खोज करनी चाहिए। अन्यथा दुःख को पकड लोगे। हीरा के बदले शीशा पकड़ में न आवे इसका स्वयं ध्यान रखना पडेगा। वास्तविक सुख तो परमात्मा में है। जिसमें दुःख लेशमात्र नहीं है। जगत में दुःख ही दुःख है, सुख का तो मात्र आभास होता है।

एक राजा का पुत्र लायक हुआ राजाने उसे राजगद्दी पर बैठने को कहा तब बेटे ने गद्दी पर बैठने को ना कह दिया क्योंकि वह वैराग्य निष्ठ था। पिता ने कहा तुम्हे गद्दी पर नहीं बैठना हो तो कुछ और मांगलो। पुत्रने कहा जोमांगू वहमिलेगा ? तो सुनिये किसी समय मृत्यु न हो, वृद्धत्व न आवे, जो द्रव्य कभी नाश न हो, खर्च कम न हो, चोर लूट न सके, इस प्रकार के सभी द्रव्य हमें दीजिये। तब पिता ने कहा बेटा तूं नहीं मागने योग्य मांग रहा है। यह सभी प्रभु के हाथ में है। यह सब वे ही दे सकते हैं। यह सब आप नहीं दे सकते है इसीलिये मैं भगवान की शरण ले लिया हूँ। अविनाशी परमात्मा के सुख को छोड़कर क्षणिक राज्य सुख को लेकर हम क्या करेंगे। ऐसा कहकर राजकुमार राज्य का त्याग कर दिया। निष्काम भक्ति करके प्रभुको प्रसन्न किया। इसलिये प्रभुकी भक्ति ही सच्चा सुख है।

•

सच्चा संग संत का

- सां.यो. शिल्पाबा तथा सां.यो.
शीतलबा (सुरेन्द्रनगर)

जो सभी में से प्रीति मुक्त हो और भगवान से प्रीति करता है उसे आज के घोर कलियुग में भी प्रभु दर्शन प्रदान करते हैं। भगवान का प्रेम करने से सभी मोह माया के बंधन टूट जाते है। प्रेम तो हमारे अटूट है परंतु जो माला टूट जाती है तो उसकी मोती बिखर जाते हैं उसी प्रकार हमारा स्नेह, प्रेम, अनेक स्थानों पर बिखरा हुआ है। जिस प्रकार पुत्री में, पत्नी में, देह में, घर में, गाडी में, जगत की मान-महत्ता में इस प्रकार सर्वत्र प्रेम बिखर जाता है। परंतु उचित समझ को प्राप्त करके भगवानमय जीवन बनाकर करोडो जन्म लेकर जो काम नहीं किया वह कार्य इस जन्म में तत्काल सिद्ध हो जाता है। भगवान या संत में प्रेम हो तो बडभागी बन जाते है, आत्मीय जन में प्रेम हो तो जन्म बिगड जाता है। जब तक आप से स्वार्थ हो तब तक आप को बुलाते है। मान सन्मान प्रदान करते हैं। बाकी तो अंत समय में भगवान के संत ही उपयोगी होते है।

एक महात्मा थे वे रोज रात्रि को एक गाँव में उपदेश देते थे। कई लोग वहाँ सभा में आते थे। महात्मा भगवान की कथा-वार्ता करते और संसार तो अमाप है ऐसा समझाते थे। भवसागर तो गोता मारने के लिये है। एकबार उन्हों ने बात की कि संसार के संबंध तो स्वार्थ के है। जब स्वार्थ पूरा हो तो मैं कौन और तुम कौन जैसी नीति है। पूर्व के ऋणानुबंध से एकदूसरे मिलते है। स्वार्थ पूर्ण होने पर छूट जाते है। सभी श्रोता एकाग्रता से कथा सुन रहे थे। इस प्रकार महात्मा जी कह कर कथापूर्ण किये। कथा श्रोता भी अपने-अपने घर की तरफ प्रस्थान किये। एक दश वर्ष का बालक वहीं बैठा ही रहा। बाद में महात्मा जी पूछे "बेटा तुम्हे घर नहीं जाना है ? तब बालक ने कहा कि संसार असार है, कहीं सुख नहीं है। संसार का संबंध स्वार्थ का है। यह सब आपने जो उपदेश दिया यह सब मेरे गले नहीं उतरता है। मेरे माता पिता एवं घर के सभी लोग प्राण की तरह मानते हैं। मेरा वियोग थोडा भी सहन नहीं कर सकते। इसमें स्वार्थ जैसा क्या है ? झूठ में सभी को भरमा रहे है। बालक की निर्दोषता, एवं निडरता देखकर संत बडा प्रसन्न हुए। बेटा ! अभी तूं छोटा है। यह बात अभी समझ नहीं आयेगी। बालक ने हठ किया आप झूठे सभी सम्बन्ध को समझाइये तभी जायेंगे महात्मा ने समझाने के लिये कहा कि तूं कल विद्यालय से आकर तबियत ठीक नहीं है ऐसा बहाना करके मुंह ढंककर सो जाना, भीतर से देखते रहना।

बाद में मैं बताऊँगा । ऐसा ही वह बालक किया । दूसरे दिन विद्यालय से आते ही सो गया । सभी उसके विमारी का कारण जान नही पाये । डॉक्टर को बुलाये फिर भी आराम नहीं हुआ । कारण तो दूसरा ही था । इतने में महात्माजी आ पहुँचे । सभी उनसे निवेदन करने लगे, उन्होंने कहा एक कटोरे मेंदूध ले आइये, दूध लाया गया, महात्माजी उसके माथे के चारो तरफ घुमाकर कहे कि जो इस दूध को पीयेगा वह मर जागेया, लेकिन बालक बच जायेगा । माता, पिता भाई, वहन, दादा, दादी, इष्ट, मित्र सभी की तरफ दृष्टि किये लेकिन दूध पीने को कोई तैयार नहीं हुआ । मरना किसे अच्छा लगता है । उस घर में मातम छाया हुआ है । महात्माजी ने कहा भाई आप लोगो को मृत्यु बहुत प्यारी है तो मैं ही पीजाता हूँ । सभी ने कहा हाँ महाराज, महात्मा परोपकारी होते है, ऐसा करेंगे तो आप भगवान हो जायेंगे । सभी महात्मा के पग पकड लिये और कहने लगे हमारा एक ही बेटा है, आप पीलीजिये । बालक सोकर सब देख रहा था । बाद में महात्माजी दूध पी गये और चल दिये । वह बालक भी बैठ गया और महात्मा के साथ चलता हुआ । घर के लोग बहुत समझाये लेकिन संसार की असारता देखकर संसार छोडकर चल दिया और संन्यास ले लिया । उसे समझ में आ गया कि संसार असार है सभी स्वार्थ के साथी हैं । सत्य सम्बन्धी तो भगवान है । संत है । इसलिये जब से समझ में आवे तभी से संसार को छोडकर संत एवं भगवान का आश्रय ले लेना चाहिए । बाद में भगवान की भजन कथावार्ता सत्संग ही साथ जायेगा । यही यथार्थ है।

•

समदर्शी सहजानंद

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

श्रीजी महाराज सच्चे अर्थ में समदर्शी थे । उनके जीवन में भेदभाव नहीं था। सगराम वाघरी के घर पधारते तो राजा के महल में भी पधारते ते । एकबार लोया में महाराज सभामें बैठे थे । कथा वार्ता हो रही थी । उसी समय गंगाबाई कथा सुनने आ गयी । गंगाबाई हरिजन ज्ञाति कीथी । कोई सत्संगी स्वामिनारायण भगवान की महिमा कही, कभी देखी नहीं थी फिर भी दर्शन की लालसा हो गयी थी । इसी चाहना से रात दिन महाराज की भजन करती रहती थी ।

आज चूडा से चलकर महाराज का दर्शन करने लोया आ गयी । चूडा की दो तीन महिलायें सभा में बैठी थी । महाराज तो अन्तर्यामी गंगा को देखते ही मंद-मंद मुस्कराने लगे । आज गंगा का जीवन धन्य हो गया । महाराज ने कहा थोडा हट कर जगह देकर साथ बैठा लीजिये तब सभी ने मुंख सिकोड लिया । महाराज ने सुरा खाचरकी पत्नी से कहा आपके पशुशाला में कोई जानवर मर जाये तो उठाकर कौन ले जाता है ।

सुराखाचर की पत्नीने कहा महाराज ! हरिजन ही ले जाते हैं । महाराजने कहा तब तो हरिजन (चमार) गाय-कुत्ता-भैंस या अन्य कोई भी जानवर मर गया हो तो उसके उठाने के लिये घर में हरिजन आता ही हैन ? तो यहाँ क्यों विरोध किया जा रहा है । यह गंगा तो मुमुक्षु है । पूर्व जन्म में नागर ब्राह्मणी थी । उच्च ज्ञाति का अभिमान होने से नीच जाति में पैदा होना पडा । आप लोग भी ऐसा भेद रखोगी तो आप सभी को इस प्रकार नीच जाति में पैदा होना पडेगा । जाति या आश्रम का जो भाव रखता है उसमें साधुता नहीं आती है । इसलिए वर्णाश्रम का मान नही रखना चाहिए .

सत्य वात समझमें आ गयी । गंगा को बैठने का स्थान मिल गया । आज सभी को नया ज्ञान प्राप्त हो गया । सहजानंद के स्वरूप का दर्शन हो गया ।

•

ऊँझा गाँव में श्रीहरि का आगमन

- पटेल रेखा बहन कीर्तिकुमार गोविंदभाई (राजगढ)

महेसाणा जिले के नदजीक ऊँझा गाँव में भगवान स्वामिनारायण ने लीला की थी । ऊंझा गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर है । वह मंदिर दक्षिणाभिमुख है । यह मंदिर संवत १७२५ की साल में शास्त्री स्वा. चैतन्यदासजीने पटेल शीनचंद बारैया के सहयोग से बनवाया था । चैतान्यदासजीने यह आशीर्वाद दिया था कि आप के सभी पुत्र सत्संगी होंगे । उसके बाद यह मंदिर नूतन ढंग से स्वामी कृष्णवल्लभदासजीने को. भक्तिभाई तथा को. विठ्ठलभाई के सहयोग से बनवाया । जिसकी प्राण प्रतिष्ठा संवत् १७७९ के ज्येष्ठ वद चौथ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज के हाथों से प्रतिष्ठित किया था ।

ऊँझा गाँव में श्रीहरि अनेकानेकबार पधारे थे । वहाँ अनेक प्रकार की लीलाभी किये थे । गाँव के पूर्व दिशा में एक बट वृक्ष है, वहाँ पर झूला झूलते थे । गांव के ईशान कोण में एक बड़ा तालाब है, जिसमें बहुत सेवाल थी, स्वयं

अपने पैर के स्पर्श मात्र से सेवाल का नाश करके पानी को शुद्ध किया था ।

ऊँझा गाँव में जयकुंवरबाई नाम की एक वृद्धा ब्राह्मणी रहती थी । उसे भगवान की भक्ति खूब प्रिय लगती थी। लेकिन घर काम से फुरसत नहीं मिलती थी । एक दिन भगवान ने उसे दर्शन देकर कहा कि तुम एक सिंगाडा खाकर व्रत करो, वह वैसा ही की, परिणाम स्वरूप भगवान उसे नित्य दर्शन देते थे ।

एक समय श्रीजी महाराज ऊँझा गाँव के एक तालाब में सेवाल को स्वयं निकाल डाले, हुआ ऐसा कि भगवान स्वयं कुछ अस्वारोहियों के साथ बट वृक्ष के नीचे रुके थे। घोडे प्यासे थे महाराजने कहा सामने तालाब में पानी पिलाकर आओ । घुडसवार वहाँ गये वापस आ गये, महाराज से कहे महाराज ! उस तालाब के ऊपर करीब एक हाथ सेवाल जमी है । जल दिखाई नहीं दे रहा है । वहाँ पर उस गाँव के लोग भी थे उनलोगों ने कहा महाराज इस तालाब के जल के लिए श्राप है, इस पर सेवाल इसी लिए जमी है, जिस कारण इतने बडे जलाशय का जल जिसमें बारह महीने पानी रहता है कोई पशु-पक्षी भी लाभ नहीं ले पाते । यह सुनकर श्रीहरि माणकी पर सवार होकर जलाशय पर गये, और पानी के सेवाल का पग से स्पर्श किये, स्पर्श करते ही सम्पूर्ण तालाब की सेवाल क्षण भर में ही नष्ट हो गयी । यह चमत्कार ऐसा हुआ कि आज तक उस तालाब में पुनः सेवाल नहीं देखने में मिली । यह चमत्कार देखकर ऊँझा गाँव के लोगों में भगवान स्वामिनारायण के प्रति आस्था दृढ हो गयी । ऊँझा गाँव को अपने चरणरज से पावन किया था ।

इसके बाद छपैया में भगवान स्वामिनारायण का कर्णबेध संस्कार मार्कण्डेय मुनि ने जब किया था, तब भगवान ने कहा था कि आप की हमारी मुलाकात होगी, उसके बाद ऊँझा गाँव में १८ संतो को दीक्षा दिये थे, जिसमें महानुभावनंद स्वामी भी थे ।

●

पृष्ठ ७ से आगे.....

देवानंद स्वामी

करने आये । उन्होंने संतो को रसोई दिया । श्रीहरि स्वयं देवानंद स्वामी आदि संतो को पक्वान्न परसते हों ऐसा दिव्य दर्शन दादा खाचर को हुआ । मयाराम भट्ट की माता जब धाम में जाने की तैयारी में थी, उसी समय मयाराम को बुलाकर कहीं कि मुझे महाराज ने कहा है कि मूली मंदिर मुझे बहुत प्रिय है । वहाँ के हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति में अखंड विराजमान हूँ । इसलिये जब मैं प्रभु के धाम में चली जाऊँ तो मूली मंदिर में ठाकरुजी को भोजन एवं संतो की रसोई जरूर देना । माताजी के धाममें जाने के बाद मूली में रसोई दिये थे ।

वि.स. १७१० श्रावण वद-९ के दिन एक दरजी भक्त को बुलाकर देवानंद स्वामीने स्वयं धाम में जाने की बात कहकर एक पालकी तैयार करवाई थी । दरजीने कहा "आप तो पूर्ण स्वस्थ है" । स्वामीने कहा कल अपने घर के बाहर कंकु का पांच पग चिन्ह दिखाई दें तो समझना कि मैं धाम में चला गया हूँ । दूसरे दिन ऐसा ही हुआ । दरजी भक्त दूसरे दिन दौड़कर मंदिर गया, लेकिन वहाँ तो देवानंद स्वामी भगवत् धाम सिधार चुके थे । मूली में भोगावा के किनारे एक छत्र बनाया गया है ।

पृष्ठ १६ से आगे.....

सत्संग बालवाटिका

वशिष्ठ मुनि के आश्रम में एक गाय थी । उसी गाय की २१ दिन तक सेवा करने की आज्ञा की । सेवा किस प्रकार करना इस की स्पष्टता करते हुए कहे कि - गाय के बैठने पर बैठना, उठने पर उठना, चलने पर चलना, यह सेवा केवल दिलीप के लिये नहीं थी बल्कि साथ में पत्नी को भी थी । दिलीपराजा की पत्नी बडी शरीर से मोटी थी । राजा की पत्नी थी इसलिए काम करने का अनुभव था ही नहीं । जिसकी सेवा में दास-दासियां हो हजारो, नौकर हो, आज अपने श्राप को हटाने के लिए गाय की सेवा करना कितना कठिन था । दिन में एक ही बार फलाहार करना था, दूसरा कुछ भी नहीं ।

इस प्रकार राजा दिलीप तथा उनकी पत्नी दोनो मिलकर रातदिन गाय की सेवा में लगी रही । २१ दिन पूर्ण होने पर गुरुवशिष्ठने राजा दिलीप को उसी गाय के दूध की पारणा करवायी । समय वीतते रानी को सुन्दर पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई ।

मित्रों ! गाय को नमस्कार किये विना आगे जाने से यह अपराध हुआ तो अपने धर्मगुरु आचार्य महाराजश्री, भगवान के भक्त, संत अपने से बडो, को नमस्कार किये विना यदि आगे जायेंगे तो अवश्य पाप लगेगा ।

इसलिये अपने इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान ने अपने आश्रितों को समझाते हुए शिक्षापत्री में लिखा है कि मार्ग में चलते समय शिवालयादि जो भी मंदिर हो उन्हें अवश्य प्रणाम करके जाना चाहिए ।

●

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास में धुनि महोत्सव

सर्वोपरि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में ता. १६ दिसम्बर से पवित्र धनुर्मास का सुभारंभ हुआ है। सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अलौकिक धून से समग्र वातावरण इनता दिव्य हो गया कै हि धून में लाभ लेने वाले संत-हरिभक्त भगवान की धून में तन्मय हो जाते है । प्रात अधिक ठंड से भी हजारो भाविक भक्त दूर-दूर से जीवन का मोक्ष का लाभ लेने हेतु पवित्र महामंत्र की धून का लाभ लेकर जीवन को धन्य बना रहे है। हर वर्ष समग्र महीने की धुन के यजमान भी बढते जा रहे हैं। उसी प्रकार दैनिक धून में भी लाभ लेनेवालो की संख्या उत्तरोत्तर बढती जा रही है। पूज्य महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से शास्त्री गोलोक स्वामी, कोठारी स्वामी, धर्मप्रकाशदासजी, स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी, मथुरा के महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी, शा. विश्ववल्लभदासजी आदि संत-पार्षद, कोठार स्टाप और युवा हरिभक्तों की सेवा वास्तव में अति सुंदर और प्रेरणादायक है।

भक्तजन आप शायद इस धून में न आ पाये हों तो अंतिम बाकी रहे दिवसो में इसका लाभ लेने से वंचित नहीं रहना। जीवन के अंत में करने का सोचते-सोचते वृद्धावस्था में कुछ भी नही होगा। इसीलिए यह दिव्य अवसर मिला है तो इस से दिव्य अवसर दूसरा और कोई नहीं है यह जान लेना चाहिए। इसीलिए सुज्ञ भक्तजन आप सभी का परिवार धनुर्मास धुन में पधारकर उसका लाभ ले। *- कोठारी स्वामी*

श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर में योजित विविध कार्यक्रम

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की आज्ञानुसार उनके स्थान पर विराजमान श्री नरनारायणदेव पीठ के सभी आचार्य महाराजश्रीने संतो को संस्कृत विद्याभास के लिए बहुत ही सुंदर रूप से रस लेकर अनेक विद्वान संत संप्रदाय में तैयार करवाये है। वर्षो तक संस्कृत पाठशाला अहमदाबाद मंदिर में थी। जो कुछ वर्षो से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी की आज्ञा से जेतलपुर वाडी में स्थलांतरित हुई है। जिसमें वडताल तथा अहमदाबाद देश के संत, पार्षद, ब्राह्मण बटुक वहाँ रहकर विद्याभ्यास करते है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में महंत शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी और पूज्य पी.पी. स्वामी और महंत के.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से पाठशाला के संचालक शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी की प्रमुख सूझ ओर कला कौशल्य से पूज्य लालजी महाराजश्री के पद पर पाठशाला परिवार द्वारा शारदीय महोत्सव का सुंदर आयोजन धूमधाम से संपन्न हुआ। पू.. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी तथा श्री सरस्वती माता का पूजन-अर्चन करके आरती उतारी थी। उसके बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। तब विद्यार्थी अति उत्साह में आ गये थे।

आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में जीवन भगत को रोटी का प्रत्यक्ष प्रसंग संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया था। योग और विविध विषय पर संतो ने अद्भुत प्रवचन किये थे। "दैवं हि बलवत्तरम्" नामक संस्कृत में सुंदर नाटक देखकर पू. महाराजश्री अति प्रसन्न होकर बोले कि ऐसा कार्यक्रम टाउनहोल में प्रत्यक्ष में ही करना चाहिए. अंत में पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से परीक्षा में १ से ३ क्रम में उतीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये।

पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. बडी गादीवालाश्री की तरफ से तमाम संत-विप्र और पार्षद विद्यार्थियोंको मानसरोवर की यात्रा के निमित्त रसोई प्रदान की गयी। पू. बडे महाराजश्रीने स्वयं भोजन परोसकर सभी विद्यार्थियों को प्रसन्न करके आशीर्वाद प्रदान किये थे।

राज्य स्तरीय संस्कृत संभाषण स्पर्धा गुजरात सरकार मान्य संस्कृत पाठशालाओं की वक्तृत्व स्पर्धा अपनी पाठशाला के यजमान पद पर स्पर्धा का सुंदर आयोजन पूज्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपपुर मंदिर के महंत शा.स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी के मार्गदर्शन से किया गया था। जिस में २० संस्था के लगभग २०० विद्यार्थीओने कुल ८ विषय में लाभ लिया था। ता. २०-११-०६ से २२-११-०६ तक स्पर्धा चली थी। अंतिम दिन प.पू. महाराजश्री विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने हेतु पधारे थे। हमारी पाठशाला के ८ विद्यार्थियोंने भाग लिया था। जिस में से ४ विद्यार्थियोंने प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करके संस्था का गौरव बढाया है। व्याकरण में (प्रथम) साधु कुंजविहारीदास गुरुस्वामी जयप्रकाशदासजी (राजकोट) वेदांत में तृतीय तुषार बी. लहेरु मोरबी, तथा साधु चैतन्यस्वरुपदास गुरु स्वामी पुरुषोत्तमदासजी (कोटेश्वर) ज्योतिष में तृतीय स्थान पर साधु सुशान्त ने न्यायशास्त्र में तृतीय स्थान प्राप्त किया था। प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले को अनुक्रम से सुवर्ण, रजत और कास्यपदक के साथ प्रमाणपत्र पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रदान किया गया। जिस संस्था के विद्यार्थियों के पोईन्ट सबसे अधिक थे उनको "वैजयंती" नामकी ट्रोफी प्रदान की गयी। उस नियमानुसार श्री रमेशभाई औझा संचालित बाबडेश्वर संस्कृत महाविद्यालय को ट्रोफी प्रदान की गई। समग्र व्यवस्था संचालकश्री शा.स्वामी हरिॐप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से पाठशाला के प्रधानाचार्यश्री और अध्यापकगण तथा विद्यार्थीओंने की थी। *-शा. व्रजवल्लभदासजी, जेतलपुर मंदिर*

क्रिकेट टुर्नामेन्ट

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी वेरावल द्वारा आयोजित राज्य स्तर की

क्रिकेट स्पर्धा का आयोजन ता. ८-१२-०७ से १३-१२-०७ तक श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर में योजित की गई थी। कुल १६ संस्कृत पाठशाळाओं ने भाग लिया था। जिस में फाईनल में श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर और अंबिका संस्कृत महाविद्यालय अंबाजी के बीच जंग हुआ था। जिस में जेतलपुर की टीम का प्रथम पारी लेकर निर्धारित २५ औवर में १०४ रन बनाये थें। उसके सामने अंबाजी की टीमने भी २५ ओवर में १०४ रन बनाये थे इसीलिए दोनो टीमों को संयुक्त विजेता घोषित किया गया।

फाईनल मेच में उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवाले साधु हरिवल्लभदास को मेन ओफ ध मेच और साधु अचलप्रकाशदास को मेन ओफ ध सीरीझ घोषित किया गया था। इस प्रसंग पर उपस्थित कुलपतिश्री पंकजभाई जानी साहेब, विजीलन्स सचिवश्री बी. के. भट्ट साहेब, सं.म.ना निरिक्षकश्री जे.पी. प्रजापति साब, गु.से. शि.मं. के अध्यक्षश्री आर.के. त्रिपाठीजी तथा मंत्रीश्री गोविंदभाई पटेल, महंत शा.स्वा. आत्मप्रकासदासजी और पू. पी.पी. स्वामीके हाथों से विजेता दोनो टीमो को ट्रोफी प्रदान की गई थी। इस क्रिकेट स्पर्धा में अपनी पाठशाला के डॉ. वी.पी. मिश्राजी तथा संचालकश्री स्वामी श्रीहरिॐप्रकाशदासजी और समस्त माहविद्यालय परिवार का इस तमाम व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है।

इस समारोह के अध्यश्री प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपनी पाठशाला के विद्यार्थियों को उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आशीर्वाद प्रदान किये थे। - *आचार्यश्री, श्री स्वा.संस्कृत महाविद्यालय, जेतलपुर*

माणसा

श्रीजी महाराज के चरणरज से अंक कित माणसा श्री स्वामिनारायण मंदिर में स.गु. भंडारी स्वामी रामचरणदासजी तथा स.गु. महंत स्वामीश्री वल्लभदासजी की प्रेरणा से बहनो के श्री स्वामिनारायण मंदिर की तरफ से ता. ५-१२-०६ से ता. ११-१२-०६ तक "श्री घनश्याम बालचरित्र" सप्ताह पारायण का शुभ आयोजन किया गया था। जिसके वक्तापद पर शास्त्री स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी गुरु शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी ने व्यासासन पर विराजकर सुमधुर शैली में कथामृत का पान करवाया था। पूर्णाहुति के मंगल दिवस पर श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अपने शुभ वरद् हाथो से पूर्णाहुति करके शुभ आशीर्वाद दिये थे। सभा का संचालन स.गु. शा. नारायणवल्लभदासजी तथा प.भ. ईश्वरभाई पटेलने किया था।

हिंमतनगर में प्रथमबार पू. लालजी महाराजश्रीका आगमन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के हर्ष से हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामीकी प्रेरणा से ता. १७-१२-०६ को पवित्र भोलेश्वर महादेव के विशाल पटांगण में सुंदर शाकोत्सव प.भ. सुमित्राबहन एस. रावल (माणसावाले) के यजमान पद पर मनाया गया। इस प्रसंग पर सबसे पहले हिंमतनगर के हरिभक्तों को दर्शन देने हेतु पू. लालजी महाराजश्री पधारने वाले है। वे जान कर सभी हरिभक्तों ने उनका स्वागत बहतु ही धूम-धाम से किया। उसके बाद पू. लालजी महाराजश्रीने स्वयं सब्जी का वघार करके सभी हरिभक्तों को प्रसन्न कर दिया।

प्रासंगिक सभा में यजमान परिवार के प.भ. जीतुभाई रावलने पू. लालजी महाराजश्री का पूजन-अर्चन, आरती उतारकर आशीर्वाद लिये।

छोटे संतसंगी बालकों ने पू. लालजी महाराजश्री का फूलहार पहनाकर उनके वरद् हाथों से ट्यूशन बेग भेंट पाकर वे प्रसन्न हो गये। अंत में सभा को दिव्य आशीर्वाद देते हुए कहा कि श्री नरनारायणदेव आप सभी का सत्संग दृढ करके आपको सुखी करे और पू. पिताश्री विदेश गये होने के कारण प्रथमबार अकेले आना पडा। इस प्रसंग पर संत-पार्षद मंडल और श्री नरनारायणदेव युवक मंडलकी सेवा प्रेरणास्म थी। - *जीतुभाई रावल*

हिंमतनगर मंदिर का १७ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर का १८वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू. बडेमहाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से धूमधूम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर ता. २६-११-०६ के दिन प.पू. बडे महाराजश्री हिंमतनगर पधारे तब संत-मंडल-यजमान परिवार और शहर के हरिभक्तोंने बहुत ही धूम-धाम से स्वागत-उत्सव किया था।

प.पू. बडे महाराजश्री ने मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर सभा में बिराजमान हुए थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. बालकृष्णभाई नारणदास सोनी तथा उनके सुपुत्र श्री दिनेशभाई और श्री परेसभाई (बेरणावाले) पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती करके हार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किये। अग्रगण्य हरिभक्तोने भी पू. महाराजश्री को हार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किये। प्रासंगिक सभा में यहाँ के महंत स्वामी रघुवीरचरणदासजी (शोकली) और डॉ. के. के. पटेल आदि सभीने प्रसंगोचित प्रवचन किया।

अंत में सभाको प.पू. महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये। हिंमतनगर से पू. महाराजश्री बेरणागाँव प.भ. रमेसभाई के यहाँ और वहाँ से प.भ. रामभाई कोदरभाई पटेल और प.भ। निलेशभाई (नेत्रामणी) की फेकटरी पर पधारकर सभी को दिव्य आशीर्वाद दिये। - *साधु हरिप्रकाशदास*

अमराईवाडी श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर का २१वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के

वरद् हाथों से धूमधाम से मनाया गया ।

प.पू. महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारकर होमात्मक महापूजा की पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । प्रासंगिक सभा में सभी हरिभक्तोंने प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने समस्त सभा को दिव्य आशीर्वाद दिये ।

समग्र आयोजन हिंमतनगर के महंत शास्त्री स्वामी आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से हुआ था ।- *साधु हरिप्रकाशदास*

झुंडाल में भक्त चिंतामणी पारायण

गांधीनगर जिला के झुंडाल श्री स्वामिनारायणमंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद और आज्ञा से श्री स्वामिनारायण भगवान की २२५ वी जन्म जयंती के निमित्त स.गु. वैराग्य मूर्ति श्री निष्कुलानंद स्वामी रचित भक्ति चिंतामणी ग्रंथ को १७५ वर्ष पूर्ण होने के निमित्त स.गु. स्वामी राजेन्द्रप्रसाददासजी की प्रेरणा से गाँव के समस्त हरिभक्तों और श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ द्वारा ता. १२-१-०६ के दिन से रोज रात्रि में ८-०० से ११-०० बजे तक भक्त चिंतामणी का पारायण शास्त्री विश्वप्रकाशदसजी (वडनगर) के वक्तापद पर संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर अहमदाबाद से कोठारी स्वामी, विश्ववल्लभदास आदि संत उपस्थित हुए थे ।

हर अंग्रेजी महिने के दूसरे रविवार को इस समय पारायण चालू रहेगी । - *पटेल हितेश आर. श्री न.ना.युवक मंडल*

विरमगाँव

विरमगाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से प.भ. बाबुभाई त्रिकमभाई ठक्कर के यहाँ तुलसी विवाह और जनोई प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूप गादीवालाश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और पू. श्री राजाने पधारकर दिव्य लाभ दिया था ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने तुलसी विवाह की आरती उतारी थी । प.पू. लालजी महाराजश्रीने प.भ. बाबुभाई के पौत्रों को जनेऊ ग्रहण करवाकर दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये थे । समस्त बहनों को प.पू. गादीवालाने दिव्य आशीर्वाद दिये थे ।

- अवनी एन. ठक्कर

नारायणघाट मंदिर में मारुति यज्ञ संपन्न हुआ

संप्रदाय की महान तीर्थभूमि श्री नारायणघाट के रमणीय पवित्र सुंदर किनारे पर भक्तों के कष्ट निवारण के लिए आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने महाप्रतापी देव श्री कष्टभंजनदेव की स्थापना की है । इस दिव्य स्थान में ता. ९-१२-०६ के शनिवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स.गु स्वामी देवप्रकाशदासजी की प्रेरणा से प.भ. गोविंदभाई पटेल तथा अ.सौ. गोमतीबहन पटेल परिवार (अमेरिका) के वरद् हाथों से (श्रीफल का होम करके) धूमधाम से संपन्न हुआ । इस प्रसंग पर यमजान परिवार के प.भ. राजेशकुमार और प.भ. विनोदकुमारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये । इस प्रसंग पर सेंकडो संत और मेहमान हिरभक्तों के प्रसाद का सुंदर आयोजन किया गया था । *- बालु स्वामी*

मणीयोर मंदिर का प्रथम पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा ईडर मंहत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से और प्रथम पाटोत्सव निमित्त समूह महापूजा कासुंदर आयोजन किया था । जिस में ५० हरिभक्तोंने लाभ लिया था । ठाकुरजी को सुंदर अन्नकूट का भोग लगाया गया था ।

इस प्रसंग पर ईडर, महुन्दा और हिंमतनगर से पधारे हुए संतोने भगवान के महात्म्य की सुंदर बातें की । हरिभक्तोंने समूह प्रसाद लेकर गाजे-बाजे के साथ श्रीहरि की सवारी निकाली । - *कोठारी सत्यसंकल्पदास*

कालीयाणा गाँव प्रसादी के स्थान में छत्री और चरणारविंद की पूजाविधि

हमारे इष्टदेव सर्वोपरि श्रीहरि संत-पार्षद और हजारो हरिभक्तों की फोज के साथ गाँव गाँव विचरण करके मुमुक्षुओं को धर्मोपदेश देकर मोक्षभागी बनाते थे । यह प्रसंग १७५ वर्ष पहले का है । महाराज जेतलपुर वहाँ से श्रीनगर में सूबा को चमत्कार दिखाकर (अहमदाबाद) अनेक स्थानों पर लीला करते जिस स्थल पर सर्वोपरि श्रीहरि पधारे थे उस दिव्य अलौकिक स्थान में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. ब्र. स्वा. जगत्प्रकाशानंदजी की प्रेरणा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पूज्य पी.पी. स्वामी के सुंदर मार्गदर्शन से गाँव के समस्त हरिभक्तों के सहयोग से सुंदर कलाकारी के साथ छत्री का निर्माण कराकर भगवान के चरणारविंद का स्थापन करके ता. १२-१२-०६ के दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति पूज्य आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से पूजन विधि का कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ था ।

यहाँ पर वर्षो पूर्व प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे। उस समय इस छत्री के पास निम्ब वृक्ष के नीचे संतो एवं हरिभक्तों के साथ अलौकिक रंग की क्रीडा किये थे । आज उस प्रसंग की याद सभी संत हरीभक्त करते रहे हैं । यही इस गाँव की भाग्य है । प. पूज्य बडे आचार्य महाराजश्री की इस गाँव पर अति कृपा है । सतत तीन बार इस गाँव में प्रत्येक घर में पदार्पण किये है । वर्तमान आचार्य महाराजश्री, लालजी महाराजश्री के स्म में जब पधारे तब समस्त गाँव के हरिभक्तों के घर पदार्पण करके घरों को तीर्थ बनाये थे । छत्री के पूजन प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्यम हाराजश्री जब पधारे तब गाँव के नरनारायण युवक मंडल द्वारा भव्य स्वागत किया गया था । प. पूज्य आचार्य महाराजश्री का अद्भुत स्वागत किया गया था । प. पूज्य आचार्य महाराजश्री के पदार्पण से अपने को भाग्यवान मानने वाले भक्त धन्यता का अनुभव किये । बाद में महाराजश्रीने छत्री का एवं चरणारविंदका पूजन अर्चन करके

आरती उतारकर भाईयों एवं बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारने हेतु पधारे थे। मंदिर के प्रासंगिक सभा में हरिभक्तों एवं ट्रस्टीओने पूज्य महाराजश्री का पूजन अर्चन किया। इसके बाद सभी हरिभक्त चरण स्पर्श करके दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किये। प. पूज्य आचार्य महाराजश्री ने गुरुमंत्र एवं पूजा माहात्म्य बताया था। अंत में महाराजश्री ने स्व भक्तों को भक्ति करने हेतु एवं निष्ठापूर्वक चरणारविंद का दर्शन करके अहैतुक लाभ प्राप्ति का कारण बताया था। कार्यक्रम पूर्ण होने के बाद महाराजश्री हरिभक्त के घर भोजन का प्रसाद लेकर गाँव को हार्दिक आशीर्वाद देकर अपने स्थान पर पधारे थे। संत एवं हरिभक्त भी प्रसाद लेकर विदा हुए थे।

- अरजणभाई मोरी

रामपुरा भंकोडा

इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने जिस भूमि पर पधारकर तीर्थ बनाये थे, वही पर बाजरी की रोटी एवं चटनी, माखन को खाये थे, तथा पत्थर पर स्नान किये थे, ऐसे इस गाँव में धनुर्मास में प्रातः श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुनि में हरिभक्त श्रद्धा भक्ति से लाभ लेकर श्रीहरि का स्मरण करते हैं।

- अरजणभाई मोरी

श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीकी आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा को २५ वर्ष पूर्ण होने से उसी उपलक्ष्य में ता. २०-१-०७ से ता. २४-१-०७ तक रजत जयंती का आयोजन किया गया है। इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीजी महाराज के (सर्वजीव हितावह) संदेश गाँव-गाँव पहुंचे इस हेतु से विगत वर्ष कुल २५ गाँवो में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, नाना पी.पी. स्वामी (कोटेश्वर), शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, स्वा. सत्यसंकल्पदास मूली, स्वा. सत्यस्वरूपदास (कोटेश्वर) इत्यादि संत उपस्थित होकर भगवान सम्बन्धी ज्ञान देकर भगवान नारायण की निष्ठा बनी रहे इस हेतु से सभी को यथार्थ ज्ञान प्राप्त करवाया था। गाँवो में एवं शहर के बाह्य विस्तारो में की गयी सभा - १. श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा २. निर्णयनगर ३. भार्गव सोसायटी ४. श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा ५. अम्बाजी माता मंदिर गवाडा ६. गेरिया ७. पामोल ८. महादेवपुरा ९. रामनगर १०. माधवगढ ११. सोखडा १२. खणुसा १३. उबखाल १४. कुकरवाडा १५. रिद्रोल १६. फतेपुरा १७. आनंदपुरा (वेडा) १८. देलवाडा १९. रणासण २०. माणेकपुर २१. ईश्वरपुरा (बदपुरा) २२. आजोल २३. देलवाडा २४. पुंधरा २५. शाहीबाग अहमदाबाद के सभी विस्तारों से हरिभक्त सहयोग देकर सभा में उपस्थित थे। गवाडा के प्रत्येक हरिभक्त सभा में लगे रहे। -

स्वामिनारायणमंदिर गवाडा गाँव समस्त

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

मूली में ज्ञान वाव पर शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर में महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से माघ अमावास्या को मूली में प्रसादी की ज्ञान वाव पर सुरेन्द्रनगर सत्संग समाज की ओर से शाकोत्सव का आयोजन किया गया था। सत्यसंकल्प स्वामी आदिने कथा वार्ता की थी। कोठारी स्वामी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने आयोजन किया था। *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

लींबडी तपोवन मंदिर

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संत हरिभक्त धनुर्मास में धून कीर्तन कथा वार्ता पर हरिभक्तों को सुंदर लाभ देते है।

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनीया (U.S.A.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति सुंदर रूप से चलती है। श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के सहयोग से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मार्गदर्शन से "श्री स्वामिनारायण सीरीयल" मूल संप्रदाय की परंपरा के अनुसार तैयार की गयी है। जो पूर्व समय में टी.वी. पर प्रसारीत होती थी। अभी उसकी DVD प्रकाशित की गयी है जिसे खूब सारे लोग खरीद रहे है। इस सीरीयल के डायरेक्टर श्री देवांग पटेल मंदिर दर्शनार्थ आये थे। उन्होने सुंदर कार्यक्रम दिया था तथा सभा में बताया की प.पू. बडे महाराजश्री तथा वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा तथा आशीर्वाद से य कार्य मुमकिन हुआ है। छपैया जैसे अलौकिक धाम तथा अयोध्या जैसी दिव्य भूमि जहाँ अनेक स्थल पर बाल घनश्याम प्रभु ने लीला की ऐसे तीर्थस्थान पर कोई बिन सत्संगी भगवान की प्रतीति कर लेता है ऐसे अनुभव उन्होंने अयोध्या के बताये थे। महंत स्वामी देवप्रसाददासजी और मंदिर कमिटी से उनका सन्मान किया गया था।

दिपावली के शुभ अवसर पर यहाँ हनुमानजी का पूजन शारदा पूजन तथा अन्नकूट धामधूमपूर्वक मनाया गया। नूतन वर्ष को १२१ यजमानोने छोटे दिपक से भगवान की आरती उतारी थी। अन्नकूट के दिन भी यजमान परिवार ने आरती का महा दिव्य लाभ लिया था। ठाकुरजी के दर्शन के लिए इस दिन खूब भीड थी दोपहर के १ से ७ तक दर्शन खुले रखे गये थे। महंत देवप्रसाददासजी ने यजमानो को पुष्पहार तथा भगवानकी मूर्ति भेट में दी थी।

स्वामीने सभा में बताया की ऐसे उत्सव प्रतिवर्ष विशेष रूप से होने चाहिए तो ही श्रीजी महाराज तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री हम पर विशेष राजी होंगे अंत में जनमंगल का समूह पाठ और धून करके लोग अलग हुए थे।

तुलसी वीवाह का सुंदर आयोजन कार्तिक सुद-१५ को शाम ४ से ९ बजे तक किया गया था । दोनों पक्ष के यजमानोने अलौकिक लाभ प्राप्त किया था । भूदेवोने संस्कृत में श्लोक बोलकर अंग्रेजी में महत्व समझाया था । महंत स्वामी देवप्रसाददासजी तथा कमिटि के सभ्योने शा.स्वा. सत्यप्रकाशदास का स्वागत किया था । सभी हरिभक्तोंने पिछले एक वर्ष से पूजा करते महंत देव स्वामी का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वदेश लौटने से पूर्व सन्मान किया था । महंत स्वामीने तुलसीजी की महिमा तथा उत्सवों की परंपरा पर प्रवचन कर यजमान का सन्मान किया था । सभा में प.पू. मातुश्री के अक्षरधाम गमन के नूतन वर्ष का आशीर्वादपत्र पढा गया था । - *प्रविण शाह*

L.A. श्री स्वामिनारायण मंदिर में छठ्ठा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से यहाँ के महंत शा.स्वा. केशवचरणदासजी की प्रेरणा से मंदिर में विराजमान श्री स्वामिनारायण भगवान, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री लक्ष्मीनारायण देव आदि देव के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ८-१२-०६ से १०-१२-०६ तक श्रीमद् सत्संगीजीवन पारायण घनश्याम स्वामी के वक्ता पद पर हुई । उन्होने कथा के प्रसंगो का सुंदर वर्णन कर श्रोताओ को आनंदित कर दिया । पाटोत्सव के मुख्य यजमान अरविंदभाई नारायणभाई तथा कथा के मुख्य यजमान श्री ईश्वरभाई चौधरी थे । विविध कार्यक्रमों का लाभ यजमानों को प्राप्त हुआ । १० दिसम्बर को ठाकुरजीके अभिषेक का दर्शन करके हरिभक्त भाव विभोर हो गये थे । ठाकुरजी का श्रृंगार बडा सुहावना लग रहा था । शिकागो से पधारे हुए शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी एवं शा.स्वा. केशवचरणदासजी ने प्रसंगानुसार प्रवचन किया था । भगवान के प्रसादी की कंठी की बोली बोली गई थी । श्री सुरेशभाई नारायणभाई पटेल ने मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर शोभायात्रा में भगवान की चित्र प्रतिमा को प्राप्त करके धन्यता का अनुभव किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल लही है । - *नटुभाई पटेल*

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

२५ दिसम्बर शनिवार की साम को २॥ बजे सभा में भजन-कीर्तन एवं वचनामृत वाचन नित्य नियम, आरती समूह में सम्पन्न हुई । हरिभक्तों की संख्या खूब अधिक है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से सत्संग की प्रवृत्ति उत्तम चल रही है ।

- *कनुभाई पटेल*

कर्नि मंदिर में फ्री मेडिकल चेकअप तथा सेवा संस्था द्वारा प्रदर्शन

सेवा संस्था I.S.S.O. द्वारा दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में कर्नि मंदिर न्युजर्शी में मेडिकल केम्प सेवा-मेडिकल के कार्य करो द्वारा मेरोड्राईव तथा केन्सर को रोकने के लिए प्रदर्शन का आयोजन किया गया था । कर्नि मंदिर के मेडिकल केम्प में यह प्रदर्शन हुआ था । जिसका अनेक भक्तों ने लाभ लिया । कर्नि मंदिर में फ्री मेडिकल मुख्य रुप से डेन्टीस्ट डॉ. हीना नायक, डॉ. हितेश के. पटेल तथा डॉ. मित्रा के. ओब्लाईन्ड एसोसिएसन की तरफ से आँखो का चेक अप किया गया था । लगभग २० भक्तों के दातों का चेकअप डॉ. हीना नायकने किया था । आंख का चेक अप दोनो डॉ. द्वारा १८ भक्तों को अभिप्राय मिला था । २० रोगियों ने जनरल मेडिकल चेक अप का लाभ लिया था । उन्हें आवश्यक दवा भी दी गयी थी । डॉ. शशीकांत पटेल द्वारा फ्री सेवा का कार्य सम्पन्न हुआ था । कोलोस्टर्स, ब्लड चेकिंग, डायाबिटीस, ब्लड प्रेसर इत्यादि का निदान इस केम्प में हुआ था । सभी प्रकार के निदान में करीब ४५ व्यक्तियों को लाभ मिला था । बाद में सेवा संस्था के कार्यकर्ताओंने रक्त की आवश्यकता को ध्यान में रखकर - टेस्ट करवाया था । आशिष सोनी द्वारा केंसर को रोकने के लिये - तम्बाकू, पान पराग, मसाला, माणकेचन्द, बीडी-सीगारेट इत्यादि पर भारदिया गया था । सीगारेट बीडी-शराब, गांजा-भांग, चाय इत्यादि के पीने से एइडस अल्सर, हाथ पैर में गांठ तथा अनेक प्रकार के नुक्सान की सम्भावना रहती है । इन उपरोक्त विषयों पर जानकारी दी गयी थी । ऐसी आदत से बचने के लिये क्या करना चाहिए इसका प्रदर्शन किया गया था । फिल्मों द्वारा जो अबोध बालकों पर गलत असर पड़ रही है उस पर भी प्रकाश डाला गया था । इस प्रकारज्ञान दिया गया था । अंत में सभी को महाप्रसाद का लाभ मंदिर द्वारा मिला था । - *कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर सेवा संस्था के कार्यक्रो द्वारा*

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

देउसणा : श्री जयंतीभाई पटेल (एल.ए. अमेरिकावाले) के पिता श्री प.भ. श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावाले प.भ. नारायणभाई पुंजलदास पटेल (भगत) ता. १४-११-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

कालियाणा : गं.स्व. शांताबहन दलसुखराम रावल ता. ८-९-०६ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है ।

माधवगढ (प्रांतीजदेश) : श्री रणछोडभाई कोह्याभाई पटेल ता. २०-११-०६ के दिन श्रीजी महाराजका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।



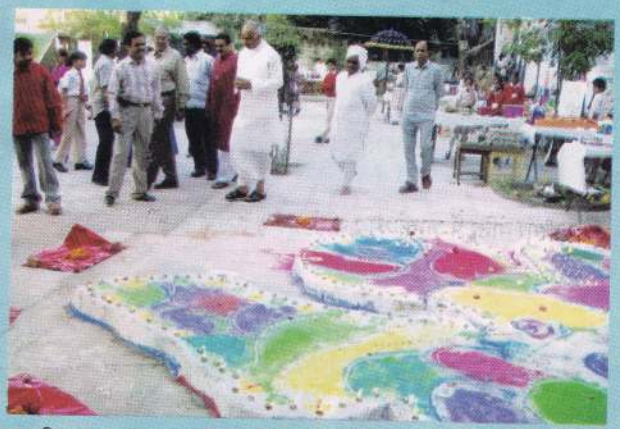
एटलान्टा (I.S.S.O.) चेप्टर में अल्पेशभाई के यहाँ ठाकुरजी का प्रथम अन्नकूट दर्शन ।



सीडनी (I.S.S.O.) मंदिर में अन्नकूट दर्शन ।



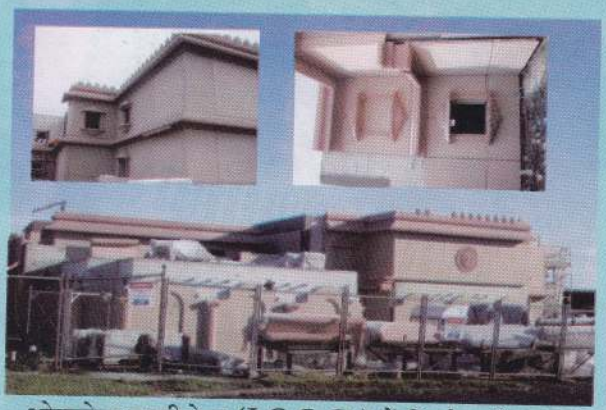
ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी के शिक्षण ट्रस्ट संचालित श्री सहजानंद कॉलेज के आचार्य डॉ. योगेश पंड्या द्वारा आयोजित "सुन्दरकांड डे" प्रसंग



श्री सहजानंद प्राथमिक विद्यालय के विज्ञान मेला का निरिक्षण करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



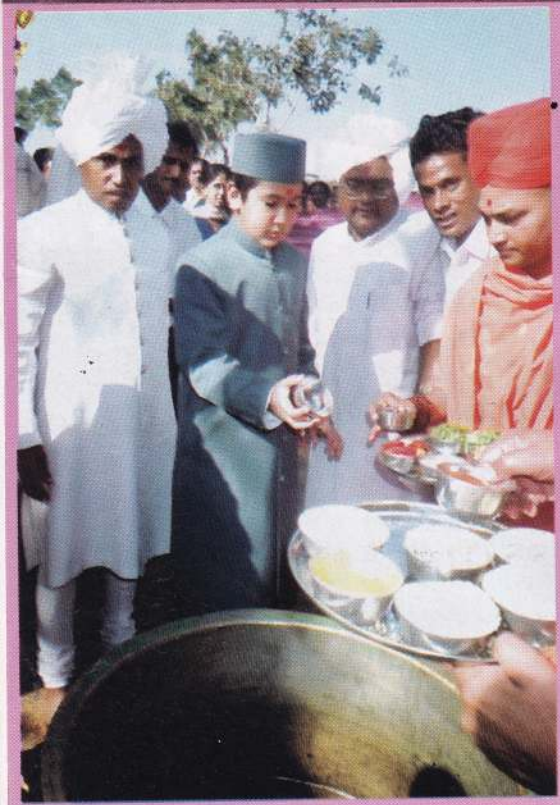
घाटलोडिया में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में धनुर्मास के असवर पर धुनि करते हुए हरिभक्त जन ।



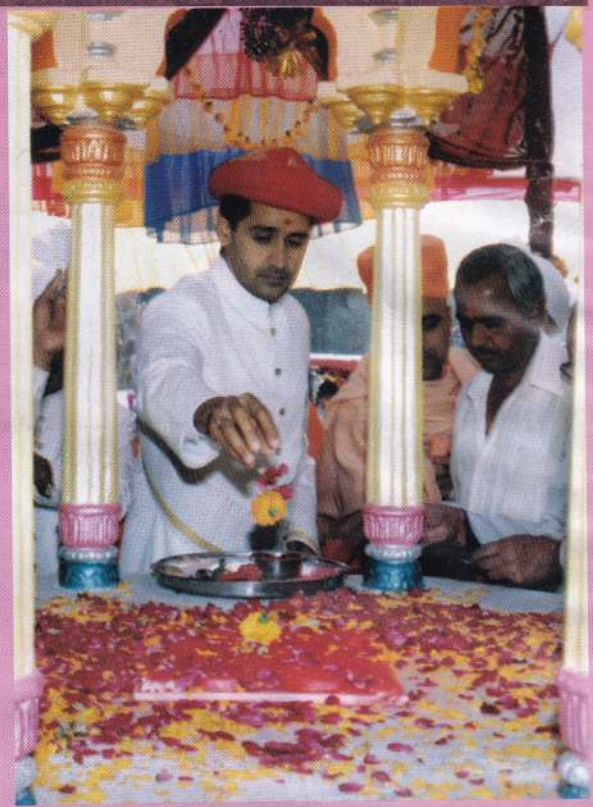
ओकलेन्ड न्युझीलेन्ड (I.S.S.O.) में निर्माणाधीन अपना भव्य मंदिर ।

Registered under RNI - No - applied Followed by words " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08

under postal Regd. No. GAMC. 003 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08



हिंमतनगर मंदिर में शाकोत्सव करते हुए पूज्य लालजी महाराजश्री



कालियाणा में श्रीहरि के प्रसादी की छत्री एवं चरणारविंद का पूजन करते हुए पूज्य महाराजश्री ।





नारायणघाट मंदिर में मारुतियज्ञ की आरती उतारते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण सीरीयल डी.वी.डी. का सेट
(विवाहादि शुभ प्रसंग पर देने योग्य) उपलब्ध है ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद
मूल्य १२५०/- रुपये ।

Pratul Khabar